About the Book

यह स्टडी बुक आपकी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता पाने का सबसे अच्छा साधन है। यह पुस्तक परीक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को कवर करती है और सभी NCERT पाठ्यपुस्तकों के महत्वपूर्ण बिंदुओं को भी शामिल करती है। पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों के महत्वपूर्ण बिंदुओं का भी इस स्टडी बुक में समावेश है, जिससे आपकी तैयारी सबसे अच्छी हो सके। हर अध्याय के अंत में, आपको पिछले प्रश्न पत्रों और अन्य विश्वसनीय स्रोतों से चुने गए अभ्यास प्रश्न मिलेंगे।

यह स्टडी बुक स्व-अध्ययन के लिए बनाई गई है, जो सभी टॉपिक्स को सरल और आसान भाषा में समझाती है। अगर आप इस स्टडी बुक को गंभीरता से पढ़ते हैं और पूरी करते हैं, तो आप आसानी से परीक्षा के 80% सवाल हल कर पाएँगे। हमने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत मेहनत की है कि यह स्टडी बुक आपकी पूरी तैयारी के लिए पर्याप्त है। तो आज ही इस स्टडी बुक का गहन अध्ययन करना शुरू करें और अपने सपने को हकीकत में पूरा करने की ओर एक बड़ा कदम उठाएँ।

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB1974

बिहार शिक्षक BPSC TRE 4.0 & 5.0
सामान्य अध्ययन स्टडी बुक
ISBN - 978-93-6054-259-7
₹ 399

बिहार शिक्षक BPSC TRE 4.0 & 5.0 सामान्य अध्ययन स्टडी बुक

CB1974

AGRAWAL EXAMCART

बिहार शिक्षक
BPSC TRE 4.0 & 5.0
TEACHER RECRUITMENT EXAM

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

प्राथमिक विद्यालय कक्षा I-V	मध्य विद्यालय कक्षा VI-VIII	माध्यमिक विद्यालय कक्षा IX-X	उच्च माध्यमिक विद्यालय कक्षा XI-XII
(परीक्षा में 88 प्रश्न)	(परीक्षा में 32 प्रश्न)	(परीक्षा में 32 प्रश्न)	(परीक्षा में 32 प्रश्न)

सामान्य अध्ययन स्टडी बुक

सामान्य अध्ययन | सामान्य जागरूकता | सामान्य विज्ञान | भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं भूगोल

एक ऐसी पुस्तक जो कराये कम समय में सामान्य अध्ययन की सम्पूर्ण एवं सटीक तैयारी!

मुख्य विशेषताएँ

संपूर्ण थ्योरी
1 NCERT व SCERT कक्षा 6 से 12 तक की सभी पाठ्यपुस्तकों के सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं का समावेश

विगत प्रश्न
2 BPSC TRE परीक्षा के विगत वर्षों के पेपर्स से संबंधित सभी बिंदुओं का समावेश

अभ्यास प्रश्न
3 अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्न

Code	Price	Pages	ISBN
CB1974	₹ 399	484	978-93-6054-259-7

विषय सूची

➔ परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना iv

सामान्य अध्ययन 1-480

1. प्राचीन काल का इतिहास 1-24
2. मध्यकालीन का इतिहास 25-47
3. आधुनिक भारत का इतिहास 48-70
4. कला एवं संस्कृति 71-87
5. भारत का भूगोल 88-124
6. विश्व का भूगोल 125-155
7. पर्यावरण 156-183
8. भारतीय संविधान 184-228
9. भारतीय अर्थव्यवस्था 229-278
10. भौतिक विज्ञान 279-312
11. रसायन विज्ञान 313-341
12. जीव विज्ञान 342-371
13. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 372-393
14. कम्प्यूटर 394-432
15. विविध 433-480

अध्याय 1

प्राचीन भारत का इतिहास

1. इतिहास और उसके स्रोत

- इतिहास कालानुक्रमिक रूप से पिछली घटनाओं का अध्ययन है। इतिहास हमें उन प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है जिन्होंने प्रारंभिक मानवों को अपने पर्यावरण पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त करने और वर्तमान समय की सभ्यताओं को विकसित करने में सक्षम बनाया।
- **इतिहास का विभाजन:** इतिहास को आम तौर पर तीन समय अवधियों में विभाजित किया जाता है – प्रागितिहास, आद्य–इतिहास और इतिहास।
  - **प्रागैतिहास:** प्रागैतिहासिक काल वह समय है जब लेखन का आविष्कार नहीं हुआ था। इसलिए इस काल का कोई लिखित अभिलेख उपलब्ध नहीं है। प्रागितिहास का हमारा ज्ञान पूरी तरह से पुरातत्व पर आधारित है। पुरातत्वविद् इस काल के बारे में जानने के लिए अतीत के भौतिक अवशेषों जैसे बर्तन, आभूषण, औजार, सिक्के, हड्डियाँ आदि का अध्ययन करते हैं।
  - **आद्य–इतिहास:** यह वह काल है जिसके लिखित अभिलेख तो हमारे पास उपलब्ध हैं लेकिन वे बहुत कम हैं और पढ़े नहीं जा सकते। अतः इस काल की भी जानकारी के मुख्य स्रोत पुरातात्विक स्रोत ही हैं। इस अवधि के लिए एक उदाहरण सिंधु घाटी सभ्यता है।
  - **इतिहास:** लेखन के आविष्कार के बाद के समय को इतिहास कहा जाता है। प्रारंभिक लेखन चट्टानों, स्तंभों, ताम्रपत्रों, शिला लेखों, ताड़ के पत्तों और भूर्ज वृक्षों की छालों पर किया जाता था। हालांकि इनमें से अधिकांश साक्ष्य समय के साथ नष्ट हो गए हैं, जो बचे हैं वे सूचना के समृद्ध स्रोत हैं।
- **इतिहास में तिथियाँ:** BCE का मतलब बिफोर द कॉमन एरा और CE का मतलब कॉमन एरा है। बीसीई में अभिव्यक्त वर्षों को पीछे की ओर गिना जाता है। उदाहरण के लिए 99 BCE (ईसा पूर्व) से पहले 100 BCE (ईसा पूर्व) आता है। सीई में व्यक्त किए गए वर्षों को आगे गिना जाता है। उदाहरण के लिए, 99 CE 100 CE से पहले आता है।
- **इतिहास के स्रोत:** स्रोत हमारे इतिहास को समझने में हमारी मदद करते हैं। ये स्रोत दो प्रकार के होते हैं: पुरातात्विक स्रोत और साहित्यिक स्रोत। साहित्यिक और पुरातात्विक अभिलेख दो मुख्य श्रेणियां हैं जो प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रमाण देती हैं। साहित्यिक स्रोत में वैदिक, संस्कृत, पाली, प्राकृत और अन्य साहित्य के साथ–साथ विदेशी साहित्य भी शामिल है। पुरातात्विक स्रोत में पुरालेखीय, मुद्राशास्त्रीय और अन्य स्थापत्य अवशेष शामिल हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

- **कलाकृतियाँ**
  - शैलचित्र
  - मृदभांड
  - टेराकोटा वस्तुएँ
  - मनका
  - आभूषण
  - मूर्तियाँ
  - धातु की वस्तुएँ
  - सिक्के
  - हथियार/शस्त्र
- **संरचनात्मक अव शेष**
  - गुफाएँ
  - आवास
  - स्तूप
  - शैलकृत गुफाएँ
  - मंदिर
  - चर्च
  - मस्जिद
  - स्तम्भ
- **लिखित स्रोत**
  - हड़प्पा की मुहरों पर शिलोख
  - वैदिक साहित्य
  - मेसोपोटामिया भृण–पट्टिका
  - महाभारत और रामायण की पांडुलिपि प्रतियाँ
  - जैन ओर बौद्ध साहित्य
  - ग्रीक इतिहास के लेखन, यात्रा वृत्तांत
  - चीनी यात्रियों के यात्रा वृतांत
  - व्याकरण, पुराण और शिलालेख पर पुस्तकें
- **मौखिक स्रोत**
  - प्राचीन भारत का वैदिक, बौद्ध और जैन साहित्य मौखिक परंपरा द्वारा संरक्षित था। यह अब लिखित रूप में उपलब्ध है। फिर भी मौखिक परम्परा आज भी जीवित है। जब इतिहास लेखन के लिए मौखिक रचनाओं का उपयोग किया जाता है, तो उन्हें मौखिक स्रोतों में शामिल किया जाता है।

प्राचीन पुस्तकें और उनके लेखक

पुस्तकें	लेखक	पुस्तकें	लेखक
मिताक्षरा	विज्ञानेश्वर	गीत गोविंद	जयदेव
दयाभाग	जीमूतवाहन	पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम	विशाखादत्त	भक्ति शतक	भृतिहारी
विक्रमादेवचरित	विल्हण	दशावतार चरित	क्षेमेंद्र
स्वप्नवासवदत्तम, चारुदत्त	भास	नितिसार	कमंदक

पुस्तकें	लेखक	पुस्तकें	लेखक
प्रबंध कोश, काव्य मीमांसा, कर्पूरमंजरी, हरविलास, बाल रामायण	राजशेखर	नाट्य शास्त्र	भरतमुनि
हर्षचरित	बाणभट्ट	रामचरितमानस	तुलसीदास
कामसूत्र	वात्स्यायन	बृहत् कथा	गुणाढ्य
मृच्छकटिक	शूद्रक	शिशुपाल वध	माघ
अमरकोष	अमरसिंह	संगीत रत्नाकर	सारंगदेव
ललित – विग्रहराज	सोमदेव	सुश्रुत संहिता	सुश्रुत

पुस्तकें	लेखक	पुस्तकें	लेखक
प्रबंध चिंतामणि और विसारसेनी	मेरुतुंग	माध्यमिका सूत्र	नागार्जुन
सिद्धांत शिरोमणि	भास्कर– II	सतसई	बिहारी लाल
मुशिका वंश	अतुला	हितोपदेश	नारायण पंडित
मिलिंद पन्हो	नागसेन	कृति कौमुदी, मनसोल्लासा	सोमेश्वर तृतीय (चालुक्य राजा)
बृहत् संहिता	वराहमिहिर	शुक्र नीति सार	शुक्र
उत्तर रामचरित	भवभूति	गौदावहो	वाक्पति
नवसहांकचरित	पद्मगुप्त	गाथा सप्तशती	हल (सातवाहन राजा)
रामचरित	संध्याकार नंदी	मतविलासा प्रहसन	महेन्द्रवर्मन प्रथम (पल्लव राजा)
काव्य दर्श	दण्डी	रत्नावली, नागानंद, प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन
कुमारपाल चरित	हेमचंद्र सूरी	परिशिष्ट पर्व	हेमचंद्र सूरी
नीतिशतक और श्रृगारशतक, वैराग्यशतक	भर्तृहरि	महाभाष्य	पतंजलि

विदेशी पुस्तकें और उनके लेखक

पुस्तकें	लेखक
युद्ध का इतिहास	अरिस्टोबुलुस
प्राकृतिक इतिहास – विज्ञान	प्लिनी
भूगोल	टॉलेमी
पेरिप्लस ऑफ एरिथ्रियन सी	अज्ञात लेखक
इंडिका	मेगस्थनीज
हिस्टोरिका	हेरोडोटस
सिकंदर की जीवनी	अनासिक्रिटस
फाह्यान की यात्राएँ	फाल्यान
पश्चिमी दुनिया के रिकॉर्ड	हुएन त्सांग
ह्वेन त्सांग की जीवनी	व्ही ली
बौद्ध धर्म का इतिहास	लामा तारानाथ
मार्को पोलो की यात्राएँ	मार्को पोलो

महत्वपूर्ण शिलालेख और शासक

शिलालेख	शासक
हाथीगुम्फा शिलालेख	कलिंग शासक खारवेल
ऐहोल शिलालेख	पुलकेशिन II
नासिक शिलालेख	गौतमी बालश्री
जूनागढ़ (गिरनार) शिलालेख	रुद्रदामन
इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख (प्रयाग प्रशस्ति)	समुद्रगुप्त
मंदसौर शिलालेख	मालवा शासक यशोवर्मन
ग्वालियर शिलालेख	प्रतिहार राजा भोज
देवपारा शिलालेख	बंगाल के शासक विजयसेन
भितरी और जूनागढ़ शिलालेख	स्कन्दगुप्त

2. प्रागैतिहासिक संस्कृतियां

- आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान पुरातात्विक प्रणाली में तीन मुख्य युग शामिल हैं – पाषाण युग, कांस्य युग और लौह युग। युगों का वर्गीकरण 1818 और 1820 में डेनिश पुरातत्वविद् क्रिश्चियन जुर्गेसन थॉमसन द्वारा विकसित किया गया था। कृपया ध्यान दें कि लिपि के विकास से पहले की अवधि को प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। इसे पाषाण युग भी कहा जाता है।

पाषाण युग के चरण

अवस्था	समय	विवरण
पुरापाषाण (पुराना पाषाण युग): 5,00,000– 10,000 ईसा पूर्व (शिकारी और खाद्य संग्राहक)		
निम्न पुरापाषाण	5,00,000– 50,000 ईसा पूर्व	इस युग में मानव शिकार के लिए पत्थरों का प्रयोग करता था जो प्रकृति में पाए जाते थे और पहले से ही अत्याधुनिक थे। उन्होंने रहने के लिए आश्रय बनाने के लिए पेड़ों की शाखाओं, पत्तियों और पत्थरों का इस्तेमाल किया। वे शाकाहारी और मांसाहारी भोजन करते थे, वे जामुन इकट्ठा करते थे। ऐसा भी अनुमान लगाया जाता है कि वे अन्य बड़े शिकारियों द्वारा छोड़े गए मृत जानवरों का मांस भी खाते हों।
मध्य पुरापाषाण	50,000 – 40,000 ईसा पूर्व	
उच्च पुरापाषाण	40,000 – 10,000 ईसा पूर्व	
मेसोलिथिक / मध्य पाषाण युग (9000 – 4000 ईसा पूर्व / शिकारी और चरवाहे): इसे पुरापाषाण और नवपाषाण के बीच एक संक्रमणकालीन चरण माना जाता है। मध्य पाषाण युग के लोग शिकार और मछली पकड़ने तथा भोजन संग्रह पर निर्भर रहते थे। बाद के चरण में, उन्होंने पशुओं को भी पालतू बनाया। इस युग के विशिष्ट उपकरण माइक्रोलिथ थे।		

क्या आप जानते हैं?

- ★ बागोर से मध्यपाषाण काल में पशु-पालन के प्रमाण मिलते हैं । यह राजस्थान में भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे प्रागैतिहासिक स्थल है। यहाँ से मध्यपाषाण काल के पाँच मानव कंकाल भी मिले हैं।

नवपाषाण (9000 – 1000 ईसा पूर्व/खाद्य उत्पादक): इस युग के दौरान, शिकारियों ने कृषि के बारे में सीखा। सबसे पहले उन्होंने जंगली फसलें इकट्ठी कीं। लगभग 10,000 साल पहले उन्होंने अनाज, फल और सब्जियों का उत्पादन शुरू किया। उन्होंने सींग, पत्थर और लकड़ी से एक हल बनाया और झुंड के जानवरों की मदद से जमीन पर खेती करना शुरू कर दिया। वे अनाज पीसने के लिए पत्थर के ओखली और मूसल का इस्तेमाल करते थे।

मनुष्य द्वारा प्रयोग किया जाने वाला पहला अनाज जौ था।

पत्थर के औजारों की प्रकृति और जलवायु परिवर्तन के आधार पर पुरापाषाण युग के चरणों का वर्गीकरण

अवस्था	निम्न पुरापाषाण (प्रारंभिक प्लेस्टोसीन)	मध्य पुरापाषाण (मध्य प्लेस्टोसीन)	उच्च पुरापाषाण (ऊपरी प्लेस्टोसीन)
औजार	चोपर, हाथ की कुल्हाड़ी, विदारक	स्क्रेपर्स, बोरर्स, ब्लेड, फ्लेक्स से बने औजार	ब्लेड और बर्न्स
प्रमुख स्थल	सोन नदी (पंजाब, पाकिस्तान), कश्मीर, छोटा नागपुर पठार, नर्मदा घाटी, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, थार रेगिस्तान और डीडवाना (राजस्थान), मिर्जापुर जिले में बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश),	नेवासा (महाराष्ट्र), डीडवाना और बुद्ध पुष्कर (राजस्थान), भीमबेटका (एमपी), नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, यमुना और अन्य नदी घाटियाँ	कुरनूल (एपी), मेरालभाई (कर्नाटक), बाघोर –I और बाघोर III (मध्य मध्य प्रदेश), दक्षिणी यूपी, दक्षिण बिहार पठार, गुजरात, पाटने (महाराष्ट्र), भीमबेटका में गुफा आश्रय

अवस्था	निम्न पुरापाषाण (प्रारंभिक प्लेस्टोसीन)	मध्य पुरापाषाण (मध्य प्लेस्टोसीन)	उच्च पुरापाषाण (ऊपरी प्लेस्टोसीन)
महत्त्व	भीमबेटका (रायसेन, मध्य प्रदेश) के रॉक शेल्टर सांस्कृतिक और तकनीकी परंपराएं: • सोन संस्कृतिः कंकड़–पत्थर के औजारों और चोपरों के निक्षेप • एश्यूलियन संस्कृतिः हाथ–कुल्हाड़ियों और क्लीवरों का जमाव	• तीसरे हिमालयी हिमा. च्छादन के समसामयिक स्तरों में अपरिष्कृत कंकड़ उद्योग • भीमबेटका पहाड़ियों में 200 रॉक शेल्टर गुफाएँ स्थित हैं जिनमें हजारों पेंटिंग हैं। • निएंडरथल मैन (प्रारंभिक मनुष्य) की आयु	• होमो सेपियन्स की उपस्थिति • रेनिगुंटा (आंध्र प्रदेश) से हारपून, ब्लेड उप. करण मिले • जलवायु कम आर्द्र हो गई।

महत्वपूर्ण चालकोलिथिक संस्कृतियाँ और उनकी विशेषताएं

संस्कृति	आहार संस्कृति	कायथा संस्कृति	मालवा संस्कृति	सावलदा संस्कृति	जोर्वे संस्कृति (प्रोटो अर्बन)	प्रभास और रंगपुर संस्कृति
अवधि	2100 – 1500 ईसा पूर्व (परिपक्व हड़प्पा संस्कृति)	2000 – 1880 ईसा पूर्व (परिपक्व हड़प्पा संस्कृति)	1700 – 1200 ई.पू. (उत्तर हड़प्पा संस्कृति)	2300 – 2000 ई.पू.	1400 – 700 ई. पू. (उत्तर हड़प्पा संस्कृति)	2000 – 1400 ई.पू
विशेषताएँ	लोगों ने सफेद डिजाइन वाले विशिष्ट काले और लाल बर्तन बनाए। उन्होंने चावल, ज्वार, बाजरा, कुल्थी, रागी, हरे मटर, मसूर और हरे और काले चने उगाए। लोग पत्थर के बने घरों में रहते थे।	बालाथल में किलेबंद बस्तियाँ पाई गईं। लोगों ने चॉकलेट रंग में डिजाइन के साथ चित्रित एक मजबूत लाल फिसलने वाले बर्तन, एक लाल रंग के बफ बर्तन और एक कंघी वाले बर्तन को उकेरा हुआ पैटर्न बनाया।	मालवा के बर्तन कपड़े में मोटे थे, लेकिन इसके ऊपर लाल या काले रंग में डिजाइन के साथ एक मोटी बफ सतह थी। यहाँ गेहूँ और जौ की खेती होती थी।	दक्कन में सबसे पुराना कृषक समुदाय	जोर्वे के बर्तनों को लाल पर काले रंग से रंगा गया था, लेकिन उनकी सतह मैट थी, जिन पर पुताई की गई थी। सबसे प्रसिद्ध मिट्टी के बर्तनों में से कुछ स्टैंड पर व्यंजन, अंकुरित फूलदान और तने हुए कप हैं।	पॉलिश किया हुआ लाल बर्तन

संस्कृति	आहार संस्कृति	कायथा संस्कृति	मालवा संस्कृति	सावलदा संस्कृति	जोर्वे संस्कृति (प्रोटो अर्बन)	प्रभास और रंगपुर संस्कृति
साइटों	आहर और बालाथल इस संस्कृति के महत्वपूर्ण स्थल थे। गिलुंद इसका क्षेत्रीय केंद्र था	चंबल और उसकी सहायक नदियाँ दो हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई थीं	नवदाटोली, एरण और नागदा प्रसिद्ध बस्तियाँ थीं। नवदाटोली सबसे बड़ी बस्तियों में से एक थी।	महाराष्ट्र में धुले जिला एक महत्वपूर्ण स्थल है	तापी, गोदावरी और भीमा की घाटियाँ। दैमाबाद सबसे बड़ी बस्तियों में से एक था।	ये दोनों संस्कृतियाँ हड़प्पा संस्कृति से ली गई हैं।

3. विश्व सभ्यताएं और सिंधु घाटी सभ्यता

- **मेसोपोटामिया (3500 से 2000 ईसा पूर्व):** मेसोपोटामिया पश्चिम एशिया में इराक और कुवैत के क्षेत्र को संदर्भित करता है। यह दो नदियों, टाइग्रिस और यूफ्रेट्स के बीच की भूमि थी, जो आधुनिक इराक में स्थित है। मेसोपोटामिया में सुमेरियन, अक्कादियन, बेबीलोनियन और असीरियन सभ्यताओं के राज्य फले-फूले।
- **सुमेरियन:** मेसोपोटामिया की सबसे पुरानी सभ्यता सुमेरियों की थी। सुमेरियन सिंधु और मिस्र की सभ्यताओं के लोगों के समकालीन थे। सुमेरियन लोग 5,000 से 4,000 ई.पू. के आसपास लोअर टाइग्रिस घाटी में बस गए।
- **द अक्कादियन्स:** अक्कादियों ने सुमेरिया पर 2450 से 2250 ईसा पूर्व तक प्रभुत्व जमाया। अक्कड़ का सर्गोन एक प्रसिद्ध शासक था। सर्गोन और उनके वंशज (सीए.2334–2218 ई.पू.) ने मेसोपोटामिया पर सौ से अधिक वर्षों तक शासन किया। अक्कादियों के कीलाकार अभिलेखों में सिन्धु सभ्यता का उल्लेख मिलता है।
- **बेबीलोनियाई:** अरब के रेगिस्तान से एमोराइट्स कहे जाने वाले सेमिटिक लोग मेसोपोटामिया में चले गए। वे बेबीलोनियों के रूप में जाने जाते थे क्योंकि उन्होंने एक राज्य की स्थापना की और बेबीलोन को अपनी राजधानी बनाया। उर (2112 से 2004 ईसा पूर्व) और बेबीलोन (1792 से 1712 ईसा पूर्व) के शक्तिशाली राज्यों ने इस क्षेत्र को नियंत्रित किया। पहले एमोराइट वंश (1792–1750 ईसा पूर्व) से संबंधित बेबीलोन के छठे राजा हम्मूराबी ने एक महान कानून-निर्माता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की थी।
- **असीरियन:** असीरियन साम्राज्य लगभग 1000 ईसा पूर्व मेसोपोटामिया में राजनीतिक रूप से सक्रिय था। अश्शूर के राजा अश्शूर के मुख्य देवता अश्शूर के याजक थे। अशर्बनपाल उत्तरवर्ती या नव-असीरियाई साम्राज्य (सीए 668 से 627 ई.पू.) का एक लोकप्रिय शासक था। उन्होंने कीलाकार अभिलेखों की एक प्रसिद्ध शृंखला स्थापित की थी। अश्शूरी लोग सुरक्षा के लिए लामासू देवता की पूजा करते थे।
- **सिंधु सभ्यता:** सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता भारत में शहरीकरण के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करती है। यह सभ्यता 'कांस्य युग' की थी। यह सभ्यता भारत और पाकिस्तान में 1.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। पश्चिम में पाकिस्तान-ईरान सीमा शोर्तुगई (अफगानिस्तान) उत्तर में आलमगीरपुर (भारत में उत्तर प्रदेश) पूर्व में और दक्षिण में दैमाबाद (भारत में महाराष्ट्र) वे सीमाएँ हैं जिनके साथ हड़प्पा संस्कृति का विस्तार रहा है। इसकी अधिक संघनन गुजरात, पाकिस्तान, राजस्थान और हरियाणा के क्षेत्रों में पाया जाता है।
- हड़प्पा के खंडहरों का वर्णन सबसे पहले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक और खोजकर्ता चार्ल्स मैसन ने अपनी पुस्तक में किया था। उन्होंने उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत में इस शहर की खोज की जो अब पाकिस्तान में है।
- हड़प्पा, उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक और सिंधु नदी के तट पर, खोजा जाने वाला पहला शहर था। सिंधु नदी के तट पर फलने-फूलने के कारण इसे ''सिंधु घाटी सभ्यता" का नाम दिया गया।
- हड़प्पा संस्कृति को विभिन्न चरणों अर्थात प्रारंभिक हड़प्पा (3000–2600 ईसा पूर्व), परिपक्व हड़प्पा (2600–1900 ईसा पूर्व) और उत्तर हड़प्पा (1900–1700 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।
- हड़प्पा की सिंधु घाटी साइट पहली बार 1826 सीई में चार्ल्स मेसन और 1831 में अलेक्जेंडर बर्न्स द्वारा अमरी में देखी गई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के पहले सर्वेक्षक अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1853, 1856 और 1875 में इस साइट का दौरा किया था।
- 1924 में एएसआई के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (खुदाई की जाने वाली पहली साइट) के बीच कई सामान्य विशेषताएं पाईं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक बड़ी सभ्यता का हिस्सा थे। मोहनजोदड़ो के पुरातात्विक स्थल को 1980 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
- **सिंधु सभ्यता की समय अवधि**
  - **भौगोलिक सीमा:** दक्षिण एशिया
  - **अवधि:** कांस्य युग
  - **समय:** 3300 से 1900 ईसा पूर्व (रेडियोकार्बन डेटिंग पद्धति का उपयोग करके निर्धारित)
  - **क्षेत्र:** 13 लाख वर्ग किमी
  - **शहर:** 6 बड़े शहर
  - **गांव:** 200 से अधिक
- **हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल**
  - **हड़प्पा** रावी के तट पर पंजाब के साहीवाल जिले में स्थित है। 1921 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मोहनजोदड़ो सिंध के** लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। 1922 में इसकी खुदाई की गई थी। यह इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
  - **अमरी** सिंधु नदी के तट पर, बलूचिस्तान में स्थित है। 1935 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **लोथल** गुजरात के अहमदाबाद जिले में खंभात की खाड़ी के पास भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1953 में की गई थी। यह अपने डॉकयार्ड के लिए जाना जाता है।
  - **धोलावीरा** गुजरात में कच्छ के रण में स्थित है। 1985 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **कालीबंगन** राजस्थान में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। 1953 में इसकी खुदाई की गई थी।
  - **मांडा** चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। 1976–77 में इसकी खुदाई की गई थी।

- **कोटदीजी** पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। 1955 और 1957 में इसकी खुदाई की गई थी।
- **चन्हुदड़ो** सिंध, पाकिस्तान में स्थित है और 1931 में इसकी खुदाई की गई थी।
- शोर्तुघई और मुंडिघाक स्थल अफगानिस्तान में स्थित हैं।

क्या आप जानते हैं?

- माण्डी-हड़प्पा सभ्यता का स्थल माण्डी मुजफ्फरनगर जिला उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। यह यमुना नदी के पूर्व में स्थित है, और इस क्षेत्र को हड़प्पा सभ्यता के मुख्य वितरण क्षेत्र के लिए परिधीय माना गया है।

साइट	जाँच – परिणाम
हड़प्पा	**उत्खनन:** दयाराम साहनी (1921), माधो स्वरूप वत्स (1926) और सर मोर्टिमर व्हीलर (1946)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: पंक्ति में छह अन्न भंडार, श्रमिकों के आवास, उर्वरा देवी की मुहर, कब्रिस्तान (आर – 37, एच), चित्रित मिट्टी के बर्तन, देवी माँ की मूर्ति, लिंगम (पुरुष यौन अंग) और योनी (महिला यौन अंग) के पत्थर के प्रतीक, लकड़ी के बक्से में जौ और गेहूँ, तांबे का पैमाना, कांस्य के लिए एक क्रूसिबल और तांबे से बना दर्पण, वैनिटी बॉक्स, पासा प्राप्त हुए हैं।
मोहनजोदड़ो/मृतकों का टीला/नखलिस्तान/सिंध का मरूद्यान	**उत्खनन:** राखल दास बनर्जी (1922), मैके (1927) और मोर्टिमर व्हीलर (1930) **पुरातात्विक निष्कर्ष:** विशाल अन्न भंडार, विशाल स्नानागार (यह सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है), सभा भवन (असेंबली हॉल), पशुपति महादेव/प्रोटो शिव की मुहर, एक नृत्य करने वाली लड़की की कांस्य प्रतिमा, दाढ़ी वाले व्यक्ति की सेलखड़ी की मूर्ति, देवी माँ की मिट्टी की मूर्तियां, सूती वस्त्र के टुकड़े, ईंट के भट्टे, दो मेसोपोटामिया की मुहरें, 1398 मुहरें (सभ्यता की कुल मुहरों का 56%)।
लोथल	**उत्खनन:** एस.आर. राव (1957)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: गोदीवाडा (डॉकयार्ड), चावल की भूसी, आग की वेदी, एक घोड़े की टेराकोटा मूर्ति, डबल दफन (एक ही कब्र में दफन एक नर और एक मादा), फारसी / ईरानी और बहरीनियन मुहर, पक्षी और लोमड़ी के साथ चित्रित एक जार।
कालीबंगन/काले रंग की चूड़ियाँ	**उत्खनन:** अमला नंद घोष (1953), डॉ. बी.बी. लाल और बी.के. थापर (1961)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: एक पूर्व–हड़प्पा क्षेत्र, सात अग्नि वेदी, सजी हुई ईंटें, एक खिलौना गाड़ी के पहिये, मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर।
चन्हूदडो	**उत्खनन:** एनजी मजूमदार (1931), ईजेएच मैके (1935)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: बिना गढ़ वाला शहर, दवात, लिपिस्टिक, मोतियों की दुकान, ईंट पर बिल्ली का पीछा करते आदि कुत्ते के पंजे की आकृति, बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल, कांस्य खिलौना गाड़ी।
रंगपुर (गुजरात)	**उत्खनन:** एम. एस. वत्स (1931), एस. आर. राव (1953–54) **पुरातात्विक निष्कर्ष:** चावल की भूसी
बनावली (हिसार, हरियाणा)	**उत्खनन:** आरएस बिष्ट (1973–74)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: ग्रिड पैटर्न टाउन प्लानिंग का अभाव, व्यवस्थित जल निकासी व्यवस्था का अभाव, मिट्टी का बना हल, खिलौना हल।
आलमगीरपुर (मेरठ, यूपी)	**उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1958)
कोट दीजी (सिंध, पाकिस्तान)	**उत्खनन:** घुर्रे (1935), फजल अहमद (1955)
अमरी (सिंध, पाकिस्तान)	**उत्खनन द्वारा:** एनजी मजूमदार (1929)
रोपड़ (पंजाब)	**उत्खनन:** वाई डी शर्मा (1955–56)
सुरकोटड़ा (कच्छ, गुजरात)	**उत्खनन:** जेपी जोशी (1964)
	पुरातात्विक खोज: घोड़े की हड्डियाँ (केवल वह स्थान जहाँ घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं), ओवल कब्र, पॉट दफन।
सुतकनाडोर (सिंध, पाकिस्तान)	**द्वारा उत्खनन:** ए स्टीन (1927)
धौलावीरा, गुजरात	**उत्खनन:** जेपी जोशी, आरएस बिष्ट (1990–91)
	पुरातात्विक निष्कर्ष: एक अद्वितीय जल संचयन प्रणाली और इसकी विशेष जल निकासी प्रणाली, एक विशाल जल जलाशय, यहाँ साइट को 3 भागों में विभाजित किया गया है।
राखीगढ़ी (हरियाणा)	**उत्खनन द्वारा:** अमरेंद्र नाथ (2014)
दैमाबाद	**पुरातात्विक खोज:** कांस्य चित्र (रथ, बैल, हाथी और गैंडे के साथ सारथी)

- हड़प्पा सभ्यता की अनूठी विशेषताएं:
  - व्यवस्थित नगर–नियोजन 'ग्रिड सिस्टम' की तर्ज पर योजना
  - निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग
  - भूमिगत जल निकासी प्रणाली (धौलावीरा में विशाल जलाशय)
  - किलेबंद दुर्ग (अपवाद – चन्हुदड़ो)

क्या आप जानते हैं?

★ हड़प्पा सभ्यता में 'गढ़' नामक स्थान पर उच्चतर वर्ग के लोग निवास करते थे। हड़प्पा नगर प्रायः दो भागों में विभाजित होते थे जिनमें एक गढ़ (ऊँचा भाग) तथा दूसरा निचला भाग जिसमें प्रायः सामान्य और कर्मकार (श्रमिक वर्ग) निवास करते थे।

- **शासक** वे लोग थे जो शहर में विशेष भवनों में रहते थे। शासकों ने लोगों को दूर देशों में धातु, कीमती पत्थर, और अन्य चीजें जो वे चाहते थे, प्राप्त करने के लिए भेजा।
- मुहरों के निर्माण में सेलखड़ी का प्रयोग किया जाता था। मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की छवि थी। **शास्त्री** वे लोग थे जो लिखना जानते थे और मुहरों को तैयार करने में मदद करते थे और शायद अन्य सामग्रियों पर लिखते थे परन्तु अब वे शेष नहीं बची हैं।
- गेहूँ और जौ मुख्य फसलें थीं और खजूर, सरसों, तिल, कपास आदि अन्य फसलें थीं।
- चावल की खेती के प्रमाण लोथल और रंगपुर (गुजरात) से मिले हैं। कृपया ध्यान दें कि सिंधु लोग दुनिया में सबसे पहले कपास (ग्रीक में सिंडन) का उत्पादन करने वाले लोग थे।

क्या आप जानते हैं?

★ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कपास उगाने में सर्वप्रथम थे। इसीलिए यूनानी लोग इसे सिन्डोन कहते थे।

- यद्यपि भेड़, बकरी, कूबड़ रहित बैल, भैंस, सूअर, कुत्ता, बिल्ली, सुअर, मुर्गी, हिरण, कछुआ, हाथी, ऊँट, गैंडा, बाघ आदि इस सभ्यता के महत्वपूर्ण प्राणी थे, फिर भी शेर उन्हें ज्ञात नहीं था। अमरी (सिंध, पाकिस्तान) से गैंडे के अवशेष मिले हैं।
- **विदेश व्यापार** सिन्धु लोगों के मेसोपोटामिया या सुमेरिया और बहरीन आदि के साथ व्यापारिक संबंध थे। वे कृषि उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, सूती सामान, कुछ मनके, टेराकोटा की मूर्तियाँ, शंख, हाथी दाँत के उत्पाद और तांबे आदि का निर्यात करते थे।
- चन्हुदड़ो से मोतियों का निर्यात किया जाता था और लोथल से शंख का निर्यात किया जाता था।
- उनके आयात इस प्रकार थे
  - कोलार (कर्नाटक), अफगानिस्तान, फारस (ईरान) से सोना
  - अफगानिस्तान, फारस (ईरान), दक्षिण भारत से चांदी
  - खेतड़ी (राजस्थान), बलूचिस्तान, अरब से ताँबा
  - महाराष्ट्र से नीलम
  - शहर–ए–सोख्ता (ईरान), किरथर हिल्स (पाकिस्तान) से सेलखड़ी
  - मध्य एशिया से जस्ता
  - बदख्शां (अफगानिस्तान) से लापीस लाजुली
  - बदख्शां से नीलम (अफगानिस्तान)
  - अफगानिस्तान और बिहार से टिन

क्या आप जानते हैं?

★ प्राचीन काल में सिन्धु सभ्यता क्षेत्र को सुमेरियन लोग मेलुहा कहते थे। सुमेरियन अभिलेख बहरीन को दिलमुन और मकरान तट को माकन के रूप में संदर्भित करते है।

- ऐसा माना जाता है कि सिंधु सभ्यता में शासन व्यापारी वर्ग के हाथों में था।
- जहां तक धर्म का संबंध है, कोई मंदिर नहीं मिला है। माँ देवी (मातृदेवी या शक्ति) की मूर्ति योनि (महिला यौन अंग) की पूजा को संदर्भित करती है। लिंगम (लिंगम) पूजा भी प्रचलित थी।
- पशुपति शिव या जानवरों के देवता या रूद्र शिव प्रमुख पुरुष देवता थे। एक मुहर मिली है जो चार जानवरों (हाथी, बाघ, गैंडे और भैंस) से घिरे एक योगी को दर्शाती है और उनके चरणों में दो हिरण दिखाई देते हैं।
- **लिपि:** सिंधु घाटी की लिपि चित्रात्मक थी। यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। लेखन बुस्ट्रोफेडन था और वैकल्पिक पंक्तियों में दाएं से बाएं और बाएं से दाएं लिखा जाता था।
- इस काल में प्रायः मृतकों को दफनाया जाता था।

4. वैदिक युग (1500–600 ईसा पूर्व)

- सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद, 1500 ईसा पूर्व के आसपास आर्यों द्वारा भूमि पर कब्जा कर लिया गया था। आर्यन शब्द का अर्थ है 'कुलीन' होता है।
- उनके कब्जे वाली भूमि को 'सप्त सिंधु' कहा जाता था जिसका अर्थ है 'सात नदियों की भूमि'। सात नदियों में सिंधु (सिंधु), वितस्ता (झेलम), आक्सिनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (व्यास), शुतुद्री (सतलज) [सभी पंजाब में], और राजस्थान में सरस्वती (सरसुती) शामिल हैं। अन्य नदियाँ राजस्थान में दृषद्वती (घग्गर), गोमती (गोमल) उत्तर प्रदेश कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वाति), क्रुमु (कुर्रम) [सभी अफगानिस्तान में] थीं।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों की मूल मातृभूमि

मातृभूमि	पंडित
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स मुलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्ड्ट
बैक्ट्रिया	जेसी रॉड
सप्त सिंधु	डॉ. अविनाश चंद्र दास और डॉ. संपूर्णानंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एलडी कल्ला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

समय, प्रसार और स्रोत	
भौगोलिक सीमा	उत्तर भारत
अवधि	लौह युग
समय	1500 ईसा पूर्व (बीसीई) – 600 ईसा पूर्व (बीसीई)
सूत्रों का कहना है	वैदिक साहित्य
सभ्यता की प्रकृति	ग्रामीण

- ऐसा माना जाता है कि आर्यों ने 2000 ईसा पूर्व – 1500 ईसा पूर्व के दौरान कई लहरों के रूप में मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवास किया था। यह एशिया माइनर, तुर्की में पाए जाने वाले बोगाजकोई शिलालेख से सिद्ध होता है। इस शिलालेख में चार वैदिक देवताओं अर्थात इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
- वैदिक युग को दो अवधियों में विभाजित किया गया है अर्थात् प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व) और बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व)।
- **प्रारंभिक वैदिक (ऋग्वैदिक) काल (1500–1000 ईसा पूर्व):** इस काल के ज्ञान का एकमात्र साहित्यिक स्रोत "ऋग्वेद" है।
- **दस राजाओं की लड़ाई (दशराज्ञ युद्ध):** इस युद्ध का नाम उन दस राजाओं के नाम पर दशराज रखा गया है, जिन्होंने सुदास (तृत्सु वंश के भरत राजा) के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। अन्य दस राजा पुरु, यदु, तुर्वस, अनु और द्रुह्यु, अलीना, पख्त, भलानस, सिबिस और विशनिन राज्यों से थे। यह युद्ध परुष्णी (रावी) के तट पर लड़ा गया था और इस युद्ध में भरत जन के राजा सुदास की विजय हुई थी।
- **ऋग्वैदिक काल में राजव्यवस्था:** सामाजिक और राजनीतिक दोनों संरचनाओं का आधार कुल (परिवार) था। कुल के ऊपर ग्राम, विस, जन और राष्ट्र थे। कुछ कुल (परिवार) मिलकर एक ग्राम (गाँव) बनाते थे, इत्यादि।

इकाई	सिर
कुला (परिवार)	कुलप
ग्राम (गाँव)	ग्रामणी
विस (कबीले)	विसपति
जन (लोग)	गोप/गोपति
राष्ट्र (देश)	राजन

- इस समय शासन की संरचना प्रकृति में पितृसत्तात्मक थी। हालाँकि राजतंत्र का शासन था, फिर भी कुछ गैर–राजशाही राजनीतिक प्रणालियाँ थीं।
- राष्ट्र पर एक राजा या राजन का शासन था, और ज्येष्ठाधिकार कानून के आधार पर, शाही वंश वंशानुगत था। सबसे अधिक संभावना है, एक वैकल्पिक राजशाही को भी मान्यता दी गई थी।
- राजा के मंत्रियों के बारे में बहुत कम जानकारी है। पुरोहित, शीर्ष पर प्राधिकारी थे। उन्होंने राजा के संरक्षक, विश्वासपात्र, साथी और दार्शनिक के रूप में कार्य किया। सेना के सेनापति सेनानी और गाँव के नेता ग्रामानी अन्य महत्वपूर्ण शाही अधिकारी थे।
- सेना में पैदल सैनिक और सारथी होते थे। हथियार धातु, लकड़ी, पत्थर और हड्डी के बने होते थे। धातु या जहरीले सींग को तीर की नोक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। किलौ (पुरो) पर हमला करने के लिए एक उपकरण पुरचरिश्रु का उल्लेख किया गया है।
- राजा के भी धार्मिक दायित्व होते थे। उन्होंने स्थापित आदेश और नैतिक सिद्धांतों की रक्षा की।
- ऋग्वेद में सभा, समिति, विदथ और गण जैसी सभाओं का उल्लेख है। सभा वरिष्ठ लोगों द्वारा बनाई गई थी। विशेषाधिकार प्राप्त और महत्वपूर्ण व्यक्तियों की एक संस्था थी। सभा और समिति, दो लोकतान्त्रिक सभाएँ, राजाओं के मनमाने शासन पर रोक लगाने का काम करती थीं। बाद के वेदों ने कानून की संस्था के रूप में सभा की भूमिका का उल्लेख किया है।
- चोरी, सेंधमारी, मवेशियों की चोरी और धोखाधड़ी कुछ तत्कालीन अपराधों में शामिल थे।
- **ऋग्वैदिक काल में समाज:** अपने आंरम्भिक समय में ऋग्वैदिक सभ्यता में जाति का स्पष्ट विभाजन नहीं मिलता है। व्यक्तियों के व्यवसायों या नौकरियों के आधार पर, समाज को वर्गीकृत किया गया था।
- एक सामान्य विभाजन के क्र में शिक्षकों और पुजारियों को ब्राह्मणों के रूप में जाना जाता था, जबकि प्रशासकों और राजाओं को क्षत्रिय, किसानों, व्यापारियों और बैंकरों को वैश्य, और श्रमिकों और कारीगरों को शूद्र के रूप में जाना जाता था।
- लोगों ने अपनी योग्यता और पसंद के आधार पर इन व्यवसायों को चुना था व्यवसाय वंशानुगत नहीं थे हालांकि वे बाद में वे आनुवंशिक बन गए।
- ऋग्वेद का एक भजन बताता है कि कैसे एक ही परिवार के सदस्यों ने अलग–अलग व्यवसायों को चुना जो कई वर्णों से संबंधित थे। ऋग्वेद के एक श्लोक में एक व्यक्ति कहता है–'मैं एक गायक हूँ! मेरे पिता एक चिकित्सक हैं, मेरी माँ मकई की चक्की है।'
- परिवारों ने इस पितृसत्तात्मक, एक पत्नीक सभ्यता में बुनियादी सामाजिक ऋवेद के एक श्लोक इकाई का निर्माण किया। बाल विवाह का कोई क्रेज नहीं था।
- एक विधवा अपने दिवंगत पति के छोटे भाई (नियोग) से शादी कर सकती थी।
- इस विवाह से उत्पन्न पुत्र को पिता की संपत्ति विरासत में मिलती थी।
- संपत्ति के अधिकार दोनों प्रकार की सम्पत्तियाँ जैसे घरों और भूमि के साथ–साथ घोड़ों, जानवरों, सोने और आभूषणों जैसी अचल वस्तुओं के लिए मौजूद थे। शिक्षक का घर वह विद्यालय होता था जहाँ वे विशेष पवित्र ग्रंथों की शिक्षा देते थे।
- ऋग्वैदिक काल के आहार में महत्वपूर्ण मात्रा में दही, मक्खन और घी जैसे अन्य डेयरी उत्पाद शामिल थे। ''दूध में पका हुआ चावल" (क्षीर–पकामोदनम) को देवताओं के प्रिय भोज्य के रूप में उल्लेख किया गया है। वे मछली, पक्षी और जानवरों का मांस खाया करते थे।
- गाय को पहले से ही अघन्य अर्थात न मारने योग्य माना जाता था।
- ऋग्वेद के अनुसार, गायों को नुकसान पहुँचाने या मारने वालों को मौत की सजा दी जाती है या राज्य से निर्वासित कर दिया जाता है।
- सुरा, सोम और मादक पेय का भी सेवन किया जाता था।
- ऋग्वैदिक काल में अधिकांश आर्य किसान और चरवाहे थे जिनकी सम्पत्ति का मूल्य आय में मापा जाता था।
- मनोरंजन में संगीत, नृत्य, रथ–दौड़ और नृत्य शामिल थे। ऋग्वेद का एक श्लोक जुआरी के विलाप करने का उल्लेख हुआ है 'मेरी पत्नी मुझे अस्वीकार करती है और उसकी माँ मुझसे नफरत करती है'।

क्या आप जानते हैं

★ वैदिक काल में धान के लिये वृहि शब्द का प्रयोग किया जाता था। यव (जौ) ए माण (उड़द) मुद्ग (मूंग) गोधूम (गेहूँ) आदि अनाजों का वर्णन अथर्ववेद में मिलता है। अन्य शब्द निम्नलिखित हैं–जौ (यव), उड़द (माण), मूंग (मुद्ग), गेहूँ (गोधूम)। कृषि क्रियाओं और फसलों का उपयोग वाजनेही संहिता और अथर्ववेद में मिलता है।

- ऋग्वैदिक काल में जिन देवताओं की पूजा की जाती थी, वे आमतौर पर प्रकृति की शक्तियाँ थीं। यह माना जाता था कि दैवीय शक्तियाँ मनुष्य को वरदान और दंड दोनों प्रदान करने में सक्षम हैं।

- इस काल में अग्नि पवित्र देवता था, क्योंकि इसे मनुष्य और ईश्वर के बीच मध्यस्थ माना जाता था। लगभग 33 देवता थे। बाद के दिनों की परंपरा ने उन्हें स्थलीय (पृथ्वी स्थान), हवाई या मध्यवर्ती (अंतरिक्ष स्थान) और आकाशीय (दुष्टाना) भगवान की 3 श्रेणियों में वर्गीकृत किया।
  - **स्थलीय (पृथ्वी अंतरिक्ष के देवता):** पृथ्वी, अग्नि, सोम, बृहस्पति और नदियाँ।
  - **आकाशीय/मध्यवर्ती (अंतरिक्ष के देवता):** इंद्र, रुद्र, वायु–वात, पर्जन्य।
  - **आकाशीय (आकाश के देवता):** धोस, सूर्य (5 रूपों मेंः सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा, विष्णु), वरुण, अदिति, उषा और अश्विन।
- इंद्र, अग्नि और वरुण ऋग्वैदिक आर्यों के सबसे लोकप्रिय देवता थे।
  - **इंद्र या पुरंदर (किले को नष्ट करने वाला):** सबसे महत्वपूर्ण देवता (250 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); जिन्होंने योद्धा की भूमिका निभाई और उन्हें वर्षा देवता माना जाता था।
  - **अग्नि:** दूसरा सबसे महत्वपूर्ण देवता (200 ऋग्वैदिक मंत्र उन्हें समर्पित हैं); अग्नि देवता को देवताओं और लोगों के बीच मध्यस्थ माना जाता था।
  - **वरुण:** व्यक्तिकृत जल; रीता' या प्राकृतिक व्यवस्था (ऋतस्यगोप) ऋत को बनाए रखने वाला था।
- सूर्य (सूर्य) की पूजा 5 रूपों में की जाती थीः सूर्य, सावित्री, मित्र, पूषा और विष्णु।
  - **सूर्य:** सूर्य भगवान जो सात घोड़ों द्वारा संचालित अपने रथ में प्रतिदिन आकाश में घूमते थे।
  - **साविती (प्रकाश की देवता):** प्रसिद्ध गायत्री मंत्र उन्हें संबोधित है।
  - **मित्र:** एक आकाश देवता।
  - **पूषन:** विवाह के देवताय मुख्य कार्य–सड़कों, चरवाहों और आवारा पशुओं की रखवाली करना था।
  - **विष्णु:** एक देवता जिसने पृथ्वी को तीन चरणों (उपक्रम) में ढक लिया।
- **सोम:** मूल रूप से अग्निस्टोमा यज्ञ के दौरान एक मजबूत पेय देने वाला पौधा, शायद भांग / भांग, जिसे पौधों के राजा के रूप में जाना जाता है; या अंततः चंद्रमा के रूप में पहचाना गया। सोम को ऋग्वेद के नौवें मंडल को बनाने का श्रेय दिया जाता है, जिसमें 114 गीत शामिल हैं। इस कारण इसे ''सोम मंडल" के नाम से जाना जाता है।
- **अन्य देवी–देवता:** रुद्र (जानवरों के देवता), द्यौस (सबसे पुराने देवता और दुनिया के पिता), यम (मृत्यु के देवता)। अश्विन नास्त्य (स्वास्थ्य, युवा और अमरता के देवता); अदिति (देवताओं की माता), सिंधु (नदियों की देवी)।
- कभी–कभी देवताओं को जानवरों के रूप में देखा जाता था लेकिन जानवरों की पूजा नहीं होती थी।
- ऋग्वैदिक धर्म वहुदेववादी था, या कई देवताओं में विश्वास रखता था, जिनमें से प्रत्येक को अलग–अलग समय में सर्वोच्च माना जाता था।
- देवताओं की पूजा यज्ञ के रूप में जाने जाने वाले अनुष्ठान के माध्यम से की जाती थी। आहुति के रूप में दूध, घी, अनाज, मांस और सोम आदि की आहुति दी जाती थी।
- **ऋग्वैदिक काल में अर्थव्यवस्था:** आर्य खानाबदोश चरण से आगे बढ़ गए। फिर भी गाय के झुंड उनके लिए बहुपयोगी थे कई पालतू जानवर थे।
- बिल्लियाँ और ऊँट जैसे जानवर संभवतः वैदिक लोगों के लिए अपरिचित थे। बाघ अज्ञात था, लेकिन वे अन्य जंगली जानवरों जैसे शेर, हाथी और सूअर से परिचित थे। व्यवहार में ज्यादा लेन–देन नहीं होता था।
- हालांकि बाजार मौजूद था परन्तु मुद्रा अस्तित्व में नहीं थी, लेकिन उनका व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता था। गायों और निश्चित मूल्य के सोने के आभूषणों विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करते थे। कोई ज्ञात सिक्के नहीं थे। उत्पाद उत्पादन में जटिलता स्पष्ट हो गई।
- अन्य व्यवसायों में बढ़ई, लोहार, चर्मकार, बुनकर, कुम्हार और चक्की पीसने का काम करने वाले पुरुष शामिल थे। बीमारियों और घावों के इलाज के लिए एक चिकित्सा विज्ञान मौजूद था। और विशेषज्ञ थे। शल्य चिकित्सा भी।
- जड़ी–बूटियों और औषधियों के साथ–साथ ताबीज और मंत्र के द्वारा रोगों को ठीक करने में प्रयोग में लाया जाता था।
- **बाद का वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व):** उत्तर वैदिक काल के दौरान, आर्यन बस्तियां वस्तुतः पूरे उत्तरी भारत (आर्यावर्त) को कवर करती थीं। संस्कृति का केंद्र अब सरस्वती से गंगा (मध्य देश) में स्थानांतरित हो गया था।
- उत्तर वैदिक काल में नर्मदा, सदानीरा (आधुनिक गंडक), चंबल आदि नदियों का उल्लेख मिलता है।
- पूर्व की ओर लोगों के विस्तार का संकेत शतपथ ब्राह्मण की एक कथा में मिलता है– कैसे विदेह माधव सरस्वती क्षेत्र से चले गए, सदानिरा को पार कर विदेह (आधुनिक तिरहुत) की भूमि पर बस गए।
- दोआब क्षेत्र में जनपद–कुरु (पुरुष और भरत का संयोजन), पंचाल (तुर्वशास और कृविस का संयोजन), काशी आदि के उद्भव तथा बाद के वैदिक साहित्य में विंध्य पर्वत (दक्षिणी पर्वत) का उल्लेख है। प्रादेशिक विभाजनों के संदर्भ में बाद के वेद भारत के तीन व्यापक विभाजन देते हैं, जैसे। आर्यावर्त (उत्तरी भारत), मध्य देश (मध्य भारत) और दक्षिणापथ (दक्षिणी भारत)।
- उत्तर वैदिक काल में बड़े राज्यों और भव्य शहरों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। तैत्तिरीय ब्राह्मण में हम राजाओं की दैवीय उत्पत्ति के सिद्धांत का उल्लेख पाते हैं।
- राजा की शक्ति के विकास की अगली कड़ी के रूप में सरकारी तंत्र पहले की तुलना में अधिक विस्तृत हो गया। ऋग्वैदिक काल के एकमात्र नागरिक अधिकारी के अलावा, नागरिक आधिकारी व पुरोहित अस्तित्व में आए।
- ये थेः भगदुधा (कर संग्रहकर्ता), सुता/सारथी, शास्त्री (चैम्बरलेन), अक्षवापा संदेश वाहक। ऋग्वैदिक काल के सैन्य अधिकारी, सेनानी (सैन्य प्रमुख) और ग्रामणी (गाँव का मुखिया) कार्यरत् थे।
- इस अवधि में प्रांतीय सरकार की एक नियमित प्रणाली की शुरुआत भी देखी गई। इस प्रकार, हम पाते हैं कि स्थपति को आदिवासियों के कब्जे वाले बाहरी क्षेत्रों के प्रशासन का काम सौंपा गया है और सतपति सौ गाँवों के समूह का शासक होता था। अधिकारिक ग्राम अधिकारी थे। उपनिषद में वर्णित उग्रस संभवतः एक पुलिस के लिए प्रयुक्त हुआ शब्द है।

12 रत्निन	
पुरोहित	**पुरोहित**
महिषी	रानी
युवराज	राजकुमार
सूत	सारथी
सेनानी	सामान्य

12 रत्निन	
पुरोहित	**पुरोहित**
ग्रामणी	गाँव का मुखिया
तक्षक	बढ़ई (रथ निर्माता)
संग्रहित्री	कोषाध्यक्ष
अक्षवपा	संदेशवाहक
भगदुक	कर संग्राहक
पलागल	राजा का मित्र
गोविकर्ता	वन विभाग के प्रमुख

- ऋग्वैदिक युग के समान, अधिकारों का प्रयोग सभा और समिति के माध्यम से किया जाता था। इस समय तक, विदथ पूरी तरह से गायब हो गया था।
- बाद के वैदिक युग में भी राजाओं के पास स्थायी सेना नहीं थी।
- न्यायपालिका का भी विस्तार हुआ। कानून को लागू करने में राजा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। एक भ्रूण की हत्या, मानव वध, विशेष रूप से एक ब्राह्मण की हत्या, सोने की चोरी और सुरा पीने को भयानक अपराध माना जाता था। देशद्रोह एक गंभीर अपराध था।
- **उत्तर वैदिक काल में समाज:** जैसे–जैसे समय बीतता गया, यज्ञ विस्तृत और जटिल औपचारिक होते गए, जो ब्राह्मणों के रूप में ज्ञात विद्वानों के उद्‌भव के लिए महत्वपूर्ण थे।
- क्षत्रियों के रूप में जाने जाने वाले लोगों का एक समूह नई भूमि पर विजय प्राप्त करने और शासन करने के लिए उभरा, क्योंकि आर्य पूर्व और दक्षिण में फैले हुए थे। शेष आर्यों ने एक अलग समूह की स्थापना की जिसे विश (वैश्य) कहा जाता है।
- चौथा वर्ग, शूद्र, गैर–आर्यों का था। हालाँकि, ये सामाजिक भेद लचीले थे। बाद के वैदिक काल में, गोत्र, या कबीले की संस्था सबसे पहले विकसित हुई।
- उच्च जातियों को निम्न जातियों के साथ विवाह करने की अनुमति थी, लेकिन शूद्रों के साथ ऐसा नहीं था। प्रदूषण समाज में एक अवधारणा बन गया।
- जाब्लो उपनिषद में चार आश्रमों (जीवन के चरणों) का सबसे पहला उल्लेख हुआ है; ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को प्राप्त करने के लिए आश्रम प्रणाली की स्थापना की गई थी।
- महिलाओं की स्थिति गिर गई। ऐतरेय ब्राह्मण ने दावा किया कि एक पुरुष परिवार का रक्षक होता है जबकि एक बेटी दुख का कारण होती है।
- मैत्रायणी संहिता हैं: शराब, स्त्री और पासा।
- हालाँकि बहुविवाह – एक पुरुष जिसकी एक से अधिक पत्नियाँ होती हैं – सामान्य थी, यद्यपि एक विवाह – एक पुरुष जिसकी केवल एक पत्नी हो – आदर्श माना जाता था। महिलाओं को राजनीतिक सभाओं में भाग लेने की अनुमति नहीं थी।
- याज्ञवल्क्य–गार्गी संवाद (बृहदारण्यक उपनिषद) इंगित करता है कि कुछ महिलाओं ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

हिंदू विवाह के प्रकार (विवाह)	
ब्रह्म विवाह	लड़की को दहेज में किसी व्यक्ति को देना।
दैव विवाह	अपनी पुत्री का विवाह पुजारी के साथ कर देना।
आर्ष विवाह	वधू–मूल्य के रूप में बैल की जोड़ी दी जाती थी।
प्रजापत्य विवाह	बिना वधू–मूल्य मांगे लड़की को एक आदमी को दे देना।
गंधर्व विवाह	प्रेम विवाह
असुर विवाह	विक्रय की गई कन्या से विवाह।
राक्षस विवाह	पराजित राजा की पुत्री से या अपहृत कन्या से विवाह।
पैशाच विवाह	बहला–फुसलाकर या बलात्कार (शरीर पर अधिकार) करके लड़की से विवाह।

- **अनुलोम विवाह:** एक उच्च जाति के पुरुष और एक निचली जाति की महिला के बीच विवाह; अनुलोम विवाह कहलाता था।
- गर्भधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णछेदन, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ और अंत्येष्टि नाम से सोलह संस्कार थे।
- **बाद के वैदिक काल में धर्म:** पहले के देवता इंद्र और अग्नि पृष्ठभूमि में चले गए जबकि प्रजापति (ब्रह्मांड के निर्माता, जिसे बाद में ब्रह्मा के रूप में जाना गया है), विष्णु (आर्यों के संरक्षक देवता) और रुद्र (जानवरों के देवता, बाद में शिव के रूप में पहचाने गए) / महेश) प्रमुखता से उभरे। इस काल में प्रजापति सर्वोच्च देवता बन गए।
- प्रारंभिक वैदिक काल में मवेशियों की रक्षा करने वाले पूषण अब शूद्रों का देवता बन गये। बृहदारण्यक उपनिषद सबसे पहले स्थानान्तरण (पुनर्जन्म/संसार–चक्र) और कर्म (कर्म) का सिद्धांत स्थापित करने वाला पहला ग्रंथ था।
- ऋग्वैदिक काल के आरंभिक चरण में साधारण अनुष्ठानों में विस्तृत बलिदानों का स्थान दिया गया जिसके लिए 17 पुजारियों की सेवाओं की आवश्यकता थी। बाद के वेदों और ब्राह्मणों में बलिदान (यज्ञ) की प्रमुखता स्थापित हो गई।
- यज्ञ दो प्रकार के होते थे–
  - **लघु यज्ञ (सरल यज्ञ):** ये गृहस्थों द्वारा किए जाते थे जैसे पंच महायज्ञ, अग्निहोत्र, दर्श यज्ञ (अमावस्या पर यानी कृष्ण पखवाड़े के अंतिम दिन), पूर्णमास यज्ञ (पूर्णिमा के दिन) आदि।
  - **महायज्ञ (भव्य यज्ञ):** ये वे यज्ञ थे जो केवल एक कुलीन और धनी व्यक्ति और राजा ही कर सकते थे।
    - **राजसूय यज्ञ:** राज्याभिषेक जिसमें अपने पूर्ण रूप में एक वर्ष से अधिक समय तक चलने वाले बलिदानों की एक श्रृंखला शामिल थी। बाद के दिनों में इसका स्थान सरलीकृत राज्याभिषेक ने ले लिया।
    - **वाजपेय यज्ञ:** शक्ति का पेय, जो एक वर्ष सत्रह दिनों की अवधि तक चलता था।
    - **अश्वमेध यज्ञ:** अश्वमेध यज्ञ, यह तीन दिनों तक चलता था इस यज्ञ में जानवरों की बलि दी जाती थी।
    - **अग्निष्टोम यज्ञ:** अग्नि को समर्पित यह यज्ञ एक दिन तक चलता था, हालांकि यज्ञिका (यज्ञ के कर्ता) और उनकी पत्नी यज्ञ से पहले एक वर्ष के लिए तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे। इस यज्ञ में सोम रस का सेवन किया जाता था।
- उपनिषद उस मजबूत भावना का प्रतिबिंब हैं जो वैदिक काल के अंत में पंथों, कर्मकांडों और पुरोहितों के प्रभुत्व के विरोध में उभरी थी।

- **उत्तर वैदिक काल में अर्थव्यवस्था :** पशुपालन का स्थान कृषि ने ले लिया। एक समय 24 बैलों का प्रयोग हल चलाने के लिए किया जाता था। खाद का प्रयोग भी किया जाता था, उसके करिषु शब्द का प्रयोग हुआ है।
- इस काल में गेहूँ, जौ, फलियाँ, तिल और चावल सभी उगाए जाते थे।
- नए रोजगार जैसे मछुआरे, धोबी, रंगरेज, द्वारपाल, और मोची दर्शाते हैं कि वस्तुओं का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था।
- विशेषाता का संकेत देते हुए रथ–निर्माता, बढ़ई, चर्मकार के बीच भेद किया जाता था। धातुओं के बारे में हमारी समझ में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं। ऋग्वेद में सोने और अयस (या तो तांबे या लोहे) के अलावा, टिन, चांदी और लोहे का उल्लेख किया गया था।
- कंपनियों (गणों) और एल्डरमेन (श्रेष्ठिनों) के उल्लेख ने इस बात का सबूत दिया कि व्यापारियों को संघों में संगठित किया गया था।
- पीजीडब्ल्यू (चित्रित ग्रे वेयर) संस्कृति—इस समय बड़े पैमाने पर प्रचलन में थी।
- **वैदिक साहित्य :** वैदिक साहित्य को दो श्रेणियों अर्थात श्रुतियों और स्मृतियों में वर्गीकृत किया गया है।
  - **श्रुति :** वैदिक साहित्य को "श्रुति" के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह मौखिक रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानान्तरित की गई है। कृपया ध्यान दें कि 'श्रुति' शब्द का अर्थ है "सुनना"। श्रुतियों में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं।
    - **वेद :** इन्हें अपौरुषेय (मनुष्य द्वारा नहीं बल्कि ईश्वर–प्रदत्त) और नित्य (सभी अनंत काल में विद्यमान) कहा जाता है। जिनमें चार वेद हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
    - पहले तीन वेदों (ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद) को सामूहिक रूप से वेदत्रयी (वेदों की तिकड़ी) के रूप में जाना जाता है।
      - **ऋग्वेद :** ऋग्वेद भजनों (गीतों) का संग्रह है। यह दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसे 'मानवता का पहला वसीयतनामा' भी कहा जाता है। इसमें 1028 सूक्त हैं जिन्हें 10 मंडलों में विभाजित किया गया है।
      - छह मंडल (दूसरे से सातवें मंडल तक) को गोत्र/वंश मंडल (कुल ग्रंथ) कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि पहला और 10वां मंडल बाद में जोड़े गए। पुरुष सूक्त, जिसमें चार वर्णों अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की जानकारी मिलती है, 10वें मंडल में है। होत्री नामक पुरोहित द्वारा ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता था।
      - ऋग्वेद में हिमालय और हिंदुकुश पर्वतों को क्रमशः हिमवंत और मुंजवंत कहा गया है।
      - ऋग्वेद में 40 नदियों का उल्लेख है और नाडी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख है। इसमें पूर्व में गंगा और यमुना तथा पश्चिम में कुभा का उल्लेख है।

क्या आप जानते हैं?

- ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है। वह सूर्य देवता सवितृ को समर्पित है। गायत्री मन्त्र में आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण होते हैं। इस मन्त्र के रचयिता ऋषि विश्वामित्र हैं।

      - ऋग्वेद के अनुसार, सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित नदी थी जबकि सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। गंगा नदी का एक बार उल्लेख किया गया है जबकि यमुना नदी का तीन बार उल्लेख किया हुआ है।
      - ऋग्वेद में योग का वर्णन भी किया गया है।
      - **सामवेद :** यह मंत्रों की पुस्तक है और संगीत से सम्बन्धित है। इसमें 1549 सूक्त हैं और सभी सूक्त (75 को छोड़कर) ऋग्वेद से लिए गए हैं। सामवेद के मंत्रों का पाठ उप्रगाता किया जाता था।
      - **यजुर्वेद :** यह यज्ञ प्रार्थनाओं की एक पुस्तक है। अर्ध्वयु नामक पुरोहित द्वारा यजुर्वेद के मंत्रों का पाठ किया जाता है। इसके दो भाग हैं कृष्ण यजुर्वेद (संपूर्ण श्लोक) और शुक्ल यजुर्वेद (पंघ और गद्य दोनों में लिखित)। वायजसनेय शुक्ल यजुर्वेद की संहिता है।
      - अथर्ववेद (जादुई सूत्रों की पुस्तक), चौथा और अंतिम, वेद जिसमें बुराइयों और बीमारियों को दूर करने के लिए मंत्र दिये गये हैं। इसे लोकिक वेद भी कहा जाता है। बहुत लंबे समय तक इसे वेदों की श्रेणी में शामिल नहीं किया गया था।
    - **ब्राह्मण :** ब्राह्मण गद्य ग्रंथ हैं। इसमें वैदिक मंत्रों के अर्थ, उनके अनुप्रयोग और उनकी उत्पत्ति की कहानियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके अलावा, यह कर्मकांडों और दर्शन के बारे में भी विस्तार से बताता है।
    - प्रत्येक वेद के साथ कई ब्राह्मण जुड़े हुए हैं:
      - **ऋग्वेद–** ऐतरेय और कौशिकी/संख्यान।
      - **साम वेद–** पंचविष (तांड्य महा ब्राह्मण), षडविंश, छांदोग्य और जैमिनीय।

क्या आप जानते हैं?

- **यजुर्वेद–** शतपथ (सबसे पुराना और सबसे बड़ा ब्राह्मण) और तैत्तिरीय।
- महाजनी प्रथा' का उल्लेख सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।

      - **अथर्ववेद–** गोपथ।
    - **उपनिषद :** उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं। उन्हें आमतौर पर वेदांत कहा जाता है, क्योंकि इनकी रचना वेद के अंत में हुई थी। उपनिषद् आर्यों के दर्शन और सिद्धान्तों का वर्णन करता है। उपनिषदो की संख्या 108 है। बृहदारण्यक सबसे प्राचीन उपनिषद है।
  - स्मृति ग्रंथों का एक निकाय है जिसमें इतिहास, पुराण, तंत्र और आगम जैसे धर्म पर शिक्षाएँ हैं। ये शाश्वत नहीं हैं। उन्हें लगातार संशोधित किया जाता है। 'स्मृति' शब्द का अर्थ निश्चित और लिखित साहित्य है। इसमें 06 विश्व अर्थात् वेदांग/सूत्र, स्मृति धर्मशास्त्र, महाकाव्य (महाकाव्य), पुराण, उपवेद और षड–दर्शन शामिल पुरोहित हैं।
    - **आरण्यक :** अरण्य का अर्थ है 'जंगल'। ये मुख्य रूप से सन्यासियों के लिए लिखे गए थे। आरण्यक ब्राह्मणों के अंतिम भाग हैं।
    - **वेदांग :** छह वेदांग हैं:
      - **शिक्षा (ध्वन्यात्मकता) :** "प्रत्याख्या" – ध्वन्यात्मकता पर सबसे पुराना पाठ।

- **कल्प सूत्र (अनुष्ठान):**
  - श्रौत सूत्र / शुल्व सूत्र – यज्ञ/अनुष्णनों से सम्बन्धित हैं।
  - गृह्य सूत्र – पारिवारिक समारोहों से संबंधित
  - धर्म सूत्र – वर्णों, आश्रमों आदि से संबंधित।
- **व्याकरण (व्याकरण):** 'पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी विश्व का प्राचीनतम व्याकरण ग्रंथ है।
- **निरुक्त (व्युत्पत्ति):** 'निरुक्त' (यास्क) 'निघंटु' (कश्यप) पर आधारित है और कठिन वैदिक शब्दों का संग्रह है। कृपया ध्यान दें कि निघंटु विश्व का सबसे पुराना शब्द–संग्रह है जबकि निरुक्त विश्व का सबसे पुराना शब्द अर्थ संग्रह है।
- **छंद (मैट्रिक्स):** पिंगल द्वारा लिखित 'छंद सूत्र' एक प्रसिद्ध ग्रंथ है।
- **ज्योतिष (खगोल विज्ञान):** लगध मुनि द्वारा लिखित 'वेदांग ज्योतिष' सबसे पुराना ज्योतिष ग्रंथ है।

➢ **स्मृतियाँ:** छह प्रसिद्ध स्मृतियाँ हैं:
- **मनु स्मृति** यह पुराना स्मृति ग्रन्थ है जो पूर्व–गुप्त काल का है। इसके भाष्यकार विश्वरूप, मेघातिथि, गोबिंदराज और कुल्लूक भट्ट थे।
- **याज्ञवल्क्य स्मृति** पूर्व–गुप्त काल की है और इसके टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर और अपरार्क (शिलाहार वंश के एक राजा) थे।
- **नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति, कात्यायन स्मृति और पराशर स्मृति** गुप्तकाल की हैं।

➢ **महाकाव्य:** मुख्य रूप से दो महाकाव्य (महाकाव्य) हैं–
- **रामायण या आदि काव्य की** रचना वाल्मीकि ने की थी। यह दुनिया का सबसे पुराना महाकाव्य है। इसमें 7 कांडों में 24,000 श्लोक अर्थात छंद (मूल रूप से 6,000, बाद में – 12,000, अंत में – 24,000) शामिल हैं। पहला और सातवाँ कांडा नवीनतम जोड़ा थे।
- **महाभारत की** रचना वेद व्यास ने की थी। यह दुनिया का सबसे लंबा महाकाव्य है। वर्तमान में, इसमें 1,00,000 श्लोक अर्थात छंद और 18 पर्व शामिल हैं, जिसमें पूरक के रूप में हरिवंश है। भगवद गीता महाभारत के भीष्म पर्व से ली गई है। शांति पर्व महाभारत का सबसे बड़ा पर्व (अध्याय) है। मूल रूप से इसमें 8,800 श्लोक थे और इसे जय संहिता के नाम से जाना जाता था। बाद में इसमें 24,000 श्लोक थे और इसे चतुरविंशती सहस्त्री संहिता / भरत के नाम से जाना जाता था। अंत में, इसमें 1,00,000 थे और इसे शतसहस्त्री संहिता / महाभारत के रूप में जाना गया।

क्या आप जानते हैं?

★ महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र की लड़ाई कुल 18 दिन तक लड़ी गई। यह युद्ध कौरव और पांडवों के मध्य कुरु साम्राज्य के सिंहासन की प्राप्ति के लिए लड़ा गया।

➢ **पुराण:** 18 प्रसिद्ध पुराण हैं। मत्स्य **पुराण** प्राचीनतम पुराण ग्रन्थ है। अन्य महत्वपूर्ण पुराण भागवत पुराण, विष्णु पुराण और वायु पुराण हैं। वे विभिन्न शाही राजवंशों की वंशावली का वर्णन करते हैं।

➢ **उपवेद:** उपवेद (सहायक वेद) पारंपरिक रूप से वेदों से जुड़े थे:
- **आयुर्वेद (चिकित्सा)** ऋग्वेद से जुड़ा है जबकि **गंधर्व वेद (संगीत)** सामवेद से जुड़ा है। **धनुर वेद (तीरंदाजी)** यजुर वेद से जुड़ा है जबकि **शिल्प वेद (शिल्प का विज्ञान)** और **अर्थवेद (धन का विज्ञान)** अथर्ववेद से जुड़ा है।

➢ **षड–दर्शन:** दर्शन के छह स्कूल हैं जिन्हें षड–दर्शन के नाम से जाना जाता है। ये इस प्रकार हैं:
- सांख्य दर्शन (संस्थापकः कपिला और मूल पाठः सांख्य सूत्र)
- योग दर्शन (संस्थापकः पतंजलि और मूल पाठः योग सूत्र)
- न्याय दर्शन (संस्थापकः गौतम और मूल पाठः न्याय सूत्र)
- वैशेषिका दर्शन (संस्थापकः कणाद और मूल पाठः वैशेषिक सूत्र)
- मीमांसा/पूर्व मीमांसा (संस्थापकः जैमिनी और मूल पाठः पूर्व मीमांसा सूत्र)
- वेदांत/उत्तर मीमांसा (संस्थापकः बादरायण और मूल पाठः ब्रह्म सूत्र/वेदांत सूत्र)

5. महाजनपद काल (600 ईसा पूर्व–325 ईसा पूर्व)

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। इससे गंगा के मैदानों में लोगों के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक जीवन में परिवर्तन आया। उत्तरी भारत में एक नई बौद्धिक जागृति विकसित होने लगी। महावीर और गौतम बुद्ध ने इस नई जागृति का प्रतिनिधित्व किया।
- महाजनपदों की राजधानी और कुछ अन्य शहर, जो समृद्ध व्यापार के कारण फले–फूले, एक बार फिर भारत में शहरीकरण का युग लेकर आए। इसे 'द्वितीय शहरीकरण' के रूप में जाना जाता है।
- ये सोलह महाजनपद इस प्रकार थे:
  - **मगध (पटना, गया और नालंदा जिले):** पहली राजधानी राजगृह थी और बाद की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
  - **अंग और वंगा (मुंगेर और भागलपुर):** राजधानी चंपा थी। यह एक समृद्ध व्यापारिक केंद्र था।
  - **मल्ल (देवरिया, बस्ती, गोरखपुर क्षेत्र):** राजधानी कुशीनगर थी। यह कई अन्य छोटे राज्यों की संयोजन थी। इनका मुख्य धर्म बौद्ध धर्म था।
  - **वत्स (इलाहाबाद और मिर्जापुर):** राजधानी कौशाम्बी थी। इस राज्य का सबसे महत्वपूर्ण शासक राजा उदयन था।
  - **काशी (बनारस):** राजधानी वाराणसी थी। हालाँकि कोसल साम्राज्य के खिलाफ कई लड़ाइयाँ लड़ी गई, अंततः काशी को कोशल साम्राज्य में मिला दिया गया।
  - **कोसल (अयोध्या):** यद्यपि इसकी राजधानी श्रावस्ती थी, जो साहेत–महेत के समान है, अयोध्या कोशल में एक महत्वपूर्ण शहर था। कोशल में कपिलवस्तु के शाक्यों के जनजातीय गणतांत्रिक क्षेत्र भी शामिल थे।

क्या आप जानते हैं?

- ★ हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनु महाकाव्य रामायण में भगवान श्रीराम अयोध्या के शासक थे, जो कौशल की राजधानी थी। कौशल महाजनपद का उल्लेख बौद्ध ग्रन्थ अगुन्तर निकाय और भगवती सूत्र में भी हुआ है।

- ❖ **वज्जी (मुजफ्फरपुर और वैशाली):** वज्जी आठ छोटे राज्यों के संयुक्त गणराज्य की सीट थी, जिसमें लिच्छवी, जाहक और विदेह भी शामिल थे।
- ❖ **कुरु (थानेश्वर, मेरठ और वर्तमान दिल्ली):** राजधानी शहर इंद्रप्रस्थ था।
- ❖ **पाँचाल (पश्चिमी उत्तर प्रदेश):** इसकी राजधानी कम्पिली (कम्पिल्य) थी। पहले एक राजशाही राज्य, यह बाद में एक स्वतंत्र गणराज्य बन गया। कन्नौज इस राज्य का एक महत्वपूर्ण नगर था।
- ❖ **मत्स्य साम्राज्य (अलवर, भरतपुर और जयपुर):** इसकी राजधानी विराटनगर थी।
- ❖ **अश्मक (नर्मदा और गोदावरी के बीच):** इसकी राजधानी पोटली/पोतन में थी और ब्रह्मदत्त इसका सबसे महत्वपूर्ण शासक था।
- ❖ **गांधार (पेशावर और रावलपिंडी):** इसकी राजधानी तक्षशिला बाद के वैदिक युग के दौरान एक व्यापार और शिक्षा केंद्र (प्राचीन तक्षशिला विश्वविद्यालय) के रूप में महत्वपूर्ण थी।
- ❖ **कंबोज (पाकिस्तान का हजारा जिला, उत्तर–पूर्वी कश्मीर):** इसकी राजधानी राजापुर थी। हजारा इस साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण व्यापार और वाणिज्य केंद्र था।
- ❖ **अवन्ति (मालवा):** अवन्ति को उत्तर और दक्षिण दो भागों में बाँटा गया था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैन थी और दक्षिणी भाग की राजधानी महिष्मती थी।
- ❖ **चेदि (बुन्देलखण्ड):** चेदि की राजधानी शक्तिमती थी। चेदि साम्राज्य यमुना और नर्मदा नदियों के बीच फैला हुआ था। इस राज्य के परिवारों में से एक परिवार बाद में इस शाही परिवार से कलिंग साम्राज्य में विलीन हो गया।
- ❖ **शूरसेन (ब्रज मंडल):** इसकी राजधानी मथुरा थी, और इसका सबसे प्रसिद्ध शासक अवन्तिपुत्र था।

6. जैन धर्म और बौद्ध धर्म

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) को प्राचीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि माना जाता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान व्यापार और शहरीकरण के पुनरुद्धार के साथ उत्तरी भारत में एक नई सभ्यता का विकास शुरू हुआ। उत्तर भारत में प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के इस दौर में बुद्ध और महावीर का जन्म हुआ। उनकी मृत्यु के बाद की सदी में, बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने भारत में प्रमुख धर्मों के रूप में जड़ें जमा लीं।
- **जैन धर्म:** जैन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द "जिन" से हुई है, जिसका अर्थ है स्वयं और बाहरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना। जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवित धर्मों में से एक है। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों को खुद के लिए आधार बनाता है।
- एक 'तीर्थंकर', वह है जिसने अलग–अलग समय पर धार्मिक सत्य प्रकट किया।

क्या आप जानते हैं?

- ★ जैन मान्यता के अनुसार एक तीर्थकर को एक तीर्थ के संस्थापक के रूप में परिभाषित किया गया है।
- ★ प्रथम तीर्थंकर ऋषभ और अंतिम तीर्थंकर महावीर थे। UP Police Constable जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे। जिनका जन्म 872 ई. पू. में वाराणसी में एक क्षत्रिय कुल में हुआ था।

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के दौरान जैन धर्म को महावीर के तत्वावधान में प्रमुखता मिली।
- जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे।

क्या आप जानते हैं?

- ★ ऋषभनाथ का निर्वाण स्थल अष्टापद है। तीर्थंकर नेमिनाथ का निर्वाण का स्थल ऊर्जयन्त है। तीर्थंकर महावीर का निर्वाण स्थल पावापुरी है। वासुपूज्य 12 वें तीर्थंकर हैं इनका निर्वाण स्थल चम्पापुरी है।
- ★ जैन धर्म के तीर्थंकर तथा उनके चिह्न–
- ★ आदिनाथ – वृषभ
- ★ मल्लिनाथ – जल–कलश
- ★ पार्श्वनाथ – सर्प
- ★ सम्भवनाथ – अश्व

- वर्धमान महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व (बीसीई) में वैशाली के पास कुंडाग्राम में हुआ था। उनकी माता लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला थीं। उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन एक राजकुमार के रूप में बिताया और उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ। इस दंपति की एक बेटी हुई थी।
- तीस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और एक तपस्वी बन गए। बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- वह लिच्छवियों का एक क्षत्रिय राजकुमार था, एक समूह जो वज्जी संघ का हिस्सा था। 30 वर्ष की आयु में वे घर छोड़कर जंगल में रहने चले गए
- बारह वर्षों से अधिक समय तक, महावीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे, उन्होंने स्वयं को घोर तपस्या और आत्म–वैराग्य के अधीन किया।
- अपनी तपस्या के तेरहवें वर्ष में, उन्होंने उच्चतम ज्ञान या सर्वज्ञता (सब कुछ जानने या असीम रूप से बुद्धिमान होने की क्षमता) या सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया और जिन (विजेता), महावीर (महान नायक) और केवला के रूप में जाना जाने लगे। तत्पश्चात, वह जिना बन गयो जिसका अर्थ है 'सांसारिक सुख और आसक्ति पर विजय प्राप्त करने वाला'।
- उन्होंने एक सरल सिद्धांत दिया जो पुरुष और महिलाएं ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अपना घर छोड़ देना चाहिए। उन्हें अहिंसा के नियमों का बहुत सख्ती से पालन करना चाहिए, जिसका अर्थ है जीवित प्राणियों को चोट पहुँचाना या मारना नहीं चाहिए।
- महावीर के अनुयायी, जो जैन कहलाते थे, बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे।
- महावीर ने मगध, विदेह और अंग के राज्यों में प्रचारक के रूप में बड़े पैमाने पर यात्रा की। मगध शासक बिंबिसार और अजातशत्रु उनकी शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे।
- 30 साल के उपदेश के बाद, महावीर की 72 साल की उम्र में 527 ईसा पूर्व (बीसीई) में पावापुरी में मृत्यु हो गई।

- **त्रि–रत्न या तीन रत्न:** महावीर ने मोक्ष की प्राप्ति (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) और कर्म से मुक्ति के लिए तीन गुना मार्ग का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **सही विश्वास (सम्यक दर्शन):** महावीर की शिक्षाओं में विश्वास।
  - **सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान):** महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास।
  - **सही कार्य (सम्यक चरित्र):** यह महावीर के पाँच महान व्रतों यानी अहिंसा, ईमानदारी, दया, सच्चाई और दूसरों से संबंधित चीजों की लालसा या इच्छा नहीं करने के पालन को संदर्भित करता है।
- **जैन आचार संहिता / जैन धर्म के पाँच सिद्धांत:** महावीर ने अपने अनुयायियों से सदाचारी जीवन जीने को कहा। स्वस्थ नैतिकता से भरा जीवन जीने के लिए उन्होंने पाँच प्रमुख सिद्धांतों का पालन करने का उपदेश दिया। वे हैं:
  - **अहिंसा –** किसी जीव को हानि न पहुँचाना
  - **सत्य –** सत्य बोलना
  - **अस्तेय –** चोरी न करना
  - **अपरिग्रह –** संपत्ति को स्वीकार न करना
  - **ब्रह्मचर्य –** ब्रह्मचर्य

क्या आप जानते हैं?

- ★ महावीर के एक प्रमुख शिष्य गौतम स्वामी ने महावीर की शिक्षाओं को संकलित किया, जिसे अगम सिद्धांत कहा जाता है।
- ★ कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में बाहुबली (गोमतेश्वर, 57 फीट) की प्रतिमा भारत में अब तक की सबसे ऊँची जैन प्रतिमा है।
- ★ केवल पाँचवाँ सिद्धांत महावीर द्वारा जोड़ा गया था। अन्य उनके पिछले तीर्थंकरों की शिक्षा से लिए गए थे।
- ★ जैन धर्म के अनुसार, ब्रह्मांड छह अविनाशी तत्वों से बना है :
  - जीव (आत्मा)
  - अजीव (भौतिक पदार्थ)
  - धर्म
  - अधर्म
  - जल
  - आकाश
- ★ वे आत्माओं की बहुलता में विश्वास करते थे।
- ★ मिथिला तीन विद्वान संतों – गार्गी, कपिला और मैत्रेय का घर था।
- ★ मिथिला शहर की पहचान नेपाल के धनुषा जिले में आधुनिक जनकपुर के रूप में की जाती है।
- ★ मैत्रेय एक बोधिसत्व हैं, जो बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, गौतम बुद्ध के अगले अवतार होंगे।
- ★ राष्ट्रकूटों ने अपने शासन काल में जैन धर्म को संरक्षण दिया। इन्होंने हिन्दू धर्म के अतिरिक्त जैन धर्म को अपना राज्य धर्म के रूप में स्वीकार किया। अमोघवर्ष प्रथम के राजदरबार में प्रसिद्ध जैन विद्वान तथा 'आदिपुराण' के लेखक 'जिनसेन' इनके राजदरबार में निवास करते थे।

- **जैन धर्म के संप्रदाय/पद्धति:** जैन धर्म को दो प्रमुख संप्रदायों में विभाजित किया गया है; दिगंबर और श्वेतांबर। विभाजन मुख्य रूप से मगध में अकाल के कारण हुआ जिसने भद्रबाहु के नेतृत्व वाले एक समूह को दक्षिण भारत जाने के लिए मजबूर किया।
- 12 वर्षों के अकाल के दौरान, दक्षिण भारत में समूह सख्त प्रथाओं पर अड़ा रहा, जबकि मगध में समूह ने अधिक लचीला रवैया अपनाया और सफेद कपड़े पहनना शुरू कर दिया।
- अकाल की समाप्ति के बाद, जब दक्षिणी समूह मगध में वापस आया, तो परिवर्तित प्रथाओं ने जैन धर्म को दो संप्रदायों में विभाजित कर दिया।
  - **दिगंबर:** इस संप्रदाय के साधु पूर्ण नग्नता में विश्वास करते हैं। पुरुष साधु कपड़े नहीं पहनते हैं जबकि महिला भिक्षु बिना सिले सादी सफेद साड़ी पहनती हैं। सभी पाँच व्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) का पालन करें। माना कि स्त्री मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। भद्रबाहु इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
  - **श्वेतांबर:** साधु सफेद वस्त्र पहनते हैं। केवल 4 व्रतों का पालन करें (ब्रह्मचर्य को छोड़कर)। विश्वास करें कि महिलाएं मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं। स्थूलभद्र इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
- भारत में जैन धर्म की व्यापक स्वीकृति के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं:
  - लोकभाषा का प्रयोग।
  - बोधगम्य उपदेश।
  - शासकों और व्यापारियों का समर्थन।
  - जैन मुनियों की दृढ़ता।
- **जैन परिषद:**
  - **प्रथम जैन परिषद:**
    - यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
    - पूर्वों के स्थान पर 12 अंगों का संकलन किया गया था।
  - **दूसरी जैन परिषद:**
    - यह 512 ईस्वी में वल्लभी (गुजरात) में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की थी।
    - इसने 12 अंग और 12 उपांगों के अंतिम रूप से संकलित किया गया था।
- **जैन धर्म का पतन:** शाही संरक्षण की कमी, इसकी गंभीरता, गुटबाजी और बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण भारत में जैन धर्म का पतन हुआ।
- **बौद्ध धर्म:** गौतम बुद्ध वर्तमान नेपाल में कपिलवस्तु के शाक्यों के एक क्षत्रिय कबीले के प्रमुख शुद्धोदन के पुत्र थे। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। चूंकि वे शाक्य वंश के थे, इसलिए उन्हें श्शाक्य मुनि' के नाम से भी जाना जाता था।
- गौतम बुद्ध का जन्म 540 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के पास लुंबिनी गार्डन में हुआ था। उनकी माता, मायादेवी (महामाया) का उनके जन्म के कुछ दिनों के बाद निधन हो गया और उनका पालन–पोषण उनकी सौतेली माँ गौतमी ने किया। सांसारिक मामलों की ओर उनका ध्यान हटाने के लिए, उनके पिता ने सोलह वर्ष की आयु में उनकी शादी यशोधरा नामक राजकुमारी से कर दी। उन्होंने कुछ समय के लिए एक सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत किया और राहुल नाम का एक पुत्र हुआ।
- पारिवारिक जीवन के दौरान से ही गौतम बुद्ध कई वर्षों तक भटकते रहे, अन्य विचारकों से मिलते रहे और विचार–विमर्श करते रहे
- वे "फोर ग्रेट साइट्स" के बाद तपस्वी बन गए। चार महान दृश्य 29 वर्ष की आयु में, सिद्धार्थ ने चार दुःखद दृश्य देखे। वह थे:
  - एक बेपरवाह बूढ़ा जिसने चिथड़े, पहन रखे हैं अपनी झुकी हुई पीठ के साथ।
  - एक बीमार आदमी एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित है।
  - एक मृत आदमी को उसके परिजन रोते बिलखते श्मशान घाट में ले जा रहे हैं।
  - एक तपस्वी

- सिद्धार्थ इन स्थलों से गहराई से हिल गए थे। उन्होंने एक तपस्वी को भी देखा जिसने संसार को त्याग दिया था और दुःख का कोई निशान नहीं पाया। इन 'चार महान स्थलों' ने उन्हें दुनिया को त्यागने और दुख के कारण की खोज करने के लिए प्रेरित किया।
- 512 ईसा पूर्व में, वह अपना महल छोड़कर सत्य की खोज में जंगल में चले गये। अपने भटकने के दौरान, वह कई दिनों तक एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठे रहे जब तक कि उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो गई।
- जिस स्थान पर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) में आज भी मौजूद है। अपने ज्ञानोदय के बाद, बुद्ध ने लोगों को अपना ज्ञान प्रदान करने का निर्णय लिया।
- वे वाराणसी गए और वहाँ अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। उन्होंने मगध और कोसल के राज्यों में प्रचार किया। बड़ी संख्या में लोग उनके अपने परिवार सहित उनके अनुयायी बन गए। पैंतालीस वर्षों के उपदेश के बाद, उन्होंने अस्सी वर्ष की आयु में कुशीनगर (उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास) में 483 ईसा पूर्व (बीसीई) में अंतिम सांस ली।
- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**
  - **दुखा (पीड़ा का सच):** बौद्ध धर्म के अनुसार, सब कुछ दुख है (सब्बम दुखम)। यह दर्द का अनुभव करने की क्षमता को संदर्भित करता है न कि केवल एक व्यक्ति द्वारा अनुभव किए गए वास्तविक दर्द और दुःख को।
  - **समुदाय (दुख के कारण):** तृष्णा (इच्छा) दुख का मुख्य कारण है। हर दुख का एक कारण होता है और यह जीवन का एक हिस्सा और पार्सल है।
  - **निरोध (दुःख के अंत) :** निर्वाण की प्राप्ति से पीड़ा/दुःख का अंत हो सकता है।
  - **अष्टांगिक–मार्ग (दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग):** दुख का अंत अष्टांगिक मार्ग में निहित है।
- **आठ गुना पथ:** इसमें ज्ञान, आचरण और ध्यान प्रथाओं से संबंधित विभिन्न परस्पर क्रियाएं शामिल हैं।
  - सम्यक दृश्य (सम्मा दित्ती)
  - सम्यक इरादा (सम्मा संगकप्पा)
  - सम्यक भाषण (सम्मा वेक्का)
  - सम्यक कार्रवाई (सम्मा कम्मंता)
  - सम्यक आजीविका (सम्मा अजिवा)
  - सम्यक सचेतनता (सम्मा सती)
  - सम्यक प्रयास (सम व्यायाम)
  - सम्यक एकाग्रता (सम्मा समाधि)
- **जीवन का पहिया:** यह दुनिया के बौद्ध दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।
- **बौद्ध संघ:** बुद्ध ने संघ नामक एक मिशनरी संगठन की नींव रखी, जिसका अर्थ है उनके विश्वास के प्रचार के लिए 'संगठन'। सदस्यों को भिक्खु (भिक्षु) कहा जाता था। वे तपस्या का जीवन व्यतीत करते थे।

क्या आप जानते हैं?

- ★ **चैत्य –** एक बौद्ध मंदिर या एक ध्यान कक्ष।
- ★ **विहार –** मठ/भिक्षुओं के रहने के स्थान।
- ★ **स्तूप –** बुद्ध के शरीर के अवशेषों पर निर्मित, वे महान कलात्मक मूल्य के स्मारक।

- **बौद्ध धर्म में विभाजन:** कनिष्क के शासनकाल के दौरान, बौद्ध भिक्षु नागार्जुन ने बौद्ध धर्म के पालन के तरीके में सुधारों की शुरुआत की। परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म हीनयान और महायान के रूप में दो भागों में विभाजित हो गया।
  - **हीनयान (कम वाहन):** यह बुद्ध द्वारा प्रचारित मूल पंथ था। इस रूप के अनुयायी बुद्ध को अपना गुरु मानते थे और उन्हें भगवान के रूप में नहीं पूजते थे। उन्होंने मूर्ति पूजा से इनकार किया और लोगों की भाषा पाली को जारी रखा।
  - **महायान (बड़ा वाहन):** इस संप्रदाय में, बुद्ध को भगवान और बोधिसत्व को उनके पिछले अवतार के रूप में पूजा जाता था। अनुयायियों ने बुद्ध और बोधिसत्व के चित्र और मूर्तियाँ बनाई और प्रार्थनाएँ कीं, और उनकी स्तुति में भजनों (मंत्रों) का पाठ किया। बाद में, उन्होंने अपनी धार्मिक पुस्तकें संस्कृत में लिखीं। बौद्ध धर्म के इस रूप को कनिष्क ने संरक्षण दिया था।
- **थेरवाद:** यह आज के बौद्ध धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। यह बुद्ध की मूल शिक्षाओं के सबसे करीब है। थेरवाद बौद्ध धर्म श्रीलंका में विकसित हुआ और बाद में दक्षिण पूर्व एशिया के बाकी हिस्सों में फैल गया। यह कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, श्रीलंका और थाईलैंड में धर्म का प्रमुख रूप है।
- **वज्रयान:** वज्रयान का अर्थ है "वज्र का वाहन", जिसे तांत्रिक बौद्ध धर्म के रूप में भी जाना जाता है। यह बौद्ध स्कूल भारत में लगभग 900 CE के आसपास विकसित हुआ। यह बाकी बौद्ध स्कूलों की तुलना में गूढ़ तत्वों और अनुष्ठानों के एक बहुत ही जटिल समुच्चय/प्रक्रिया पर आधारित है।
- **जेन:** यह महायान बौद्ध धर्म का एक स्कूल है जो चीन में तांग राजवंश के दौरान चीनी बौद्ध धर्म के चौन स्कूल के रूप में उत्पन्न हुआ और बाद में विभिन्न स्कूलों में विकसित हुआ। यह 7वीं शताब्दी में जापान में फैल गया। ध्यान और तंत्र इस बौद्ध परंपरा की सबसे विशिष्ट विशेषताएँ हैं।
- **बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण:**
  - स्थानीय भाषा में बुद्ध के उपदेशों की सरलता ने लोगों को आकर्षित किया।
  - बौद्ध धर्म ने व्यापक धार्मिक रीति–रिवाजों को खारिज कर दिया जबकि रूढ़िवादी वैदिक धर्म के अभ्यास ने महंगे कर्मकांडों और बलिदानों पर जोर दिया।
  - बुद्ध का जोर धम्म के पालन पर था। इस कारण बौद्ध संघों ने बुद्ध के संदेशों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बौद्ध परिषदें

आयोजन	जगह	अध्यक्ष	संरक्षक राजा
पहली	राजगृह	महाकस्सप	अजातशत्रु
दूसरी	वैशाली	साबकमीरा/ सबाकामी	कालाशोक
तीसरी	पाटलिपुत्र	भोगाली पुत्ततिस	अशोक
चौथी	कश्मीर	वसुमित्र	कनिष्क

क्या आप जानते हैं

- ★ पहली बौद्ध संगीति के उपदेशों को दो पिटकों विनयपिटक और सुत्तपिटक में बाँटा गया था।
- ★ बौद्ध धर्म की चौथी संगीति में यह धर्म मुख्यतः दो शाखाओं में विभाजित हो गया-हीनयान तथा महायान।

- ★ गौतम बुद्ध ने कौशाम्बी उदयन के राज्य काल में प्रवेश किया था। कौशाम्बी वत्स महाजनपद की राजधानी के नाम से जानी जाती थी। बुद्ध ने अपने जीवन का सर्वाधिक उपदेश कोशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिया उन्होंने मगध को अपना केन्द्र भी बनाया।

- **त्रिपिटक:** विनयपिटक में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के मठवासी जीवन पर लागू होने वाले आचरण और अनुशासन के नियम शामिल हैं।
- सुत्तपिटक में बुद्ध के मुख्य शिक्षण या धम्म शामिल हैं। इसे पाँच निकायों या संग्रहों में विभाजित किया गया है :
  - दीर्घ निकाय
  - मज्जिम निकाय
  - संयुक्त निकाय
  - अंगुत्तार निकाय
  - खुद्दक निकाय
- अभिधम्म पिटक भिक्षुओं के शिक्षण और विद्वतापूर्ण गतिविधियों का एक दार्शनिक विश्लेषण और व्यवस्थितकरण है।

क्या आप जानते हैं?

- ★ उपसाक पिटक के अलावा अभिधम्म सुत्त और विनय पिटक बौद्ध ग्रन्थ हैं जिन्हें पालि भाषा में लिखा गया है।

- अन्य महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथों में दिव्यावदान, दीपवंश, महावंश, मिलिंद पन्हे आदि शामिल हैं।
- वंशपाकसिनी भारत में लिखा गया अंतिम बौद्ध ग्रन्थ था। इससे हमें मौर्यो की उत्पत्ति के बारे में जानकारी मिलती है।
- सिलप्पादिकारम और मणिमेकलई बौद्ध धर्म से संबंधित पुस्तकें हैं, जो तमिल साहित्य में पाई जाती हैं। ये एक बौद्ध भिक्षु इलंगो आदिगल द्वारा लिखी गई हैं।

7. मगध का उदय

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व से भारत का राजनीतिक इतिहास वर्चस्व के लिए चार राज्यों–मगध, कोशल, वत्स और अवंती के बीच संघर्ष का इतिहास है।
- मगध साम्राज्य अंततः सबसे शक्तिशाली साबित हुआ और एक साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहा।
- **मगध की सफलता के कारण:**
  - मगध को लोहे के युग के दौरान एक अनुकूल भौगोलिक स्थिति से लाभ हुआ क्योंकि मगध का आरम्भिक शहर राजगीर सबसे समृद्ध लोहे की खानों के करीब था, जिसका उपयोग हथियार बनाने के लिए किया जा सकता था।
  - मगध गंगा के मैदान के मध्य में स्थित था। जंगलों को हटा दिए जाने के बाद, जलोढ़ अविश्वसनीय रूप से फलदायी साबित हुआ, जिसके परिणामस्वरूप भोजन की प्रचुरता हुई।
  - मगध को एक अनुकूल सैन्य संरचना से विशेष रूप से लाभ हुआ। भले ही भारतीय राज्य घोड़ों और रथों का उपयोग करने के आदी थे, यह मगध था जिसने पहली बार पड़ोसियों के खिलाफ लड़ाई में बड़े पैमाने पर हाथियों को नियुक्त किया था।
- **हर्यंक वंश (544 ईसा पूर्व–412 ईसा पूर्व):**
  - **बिम्बिसार/श्रोणिक (544 ईसा पूर्व–492 ईसा पूर्व):** वह हर्यंक वंश के संस्थापक थे। बिंबिसार के निर्देशन में मगध का उत्थान हुआ।
  - वह उसी समय रहते थे जब गौतम बुद्ध थे। बिम्बसार ने अपनी विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने कोशल (कोसलदेवी/महाकोसला/कोशल सम्राट प्रसेनजीत की बहन), लिच्छवी (लिच्छवी प्रमुख चेतक की बहन चेल्लाना) और मद्र (मद्र सम्राट की पुत्री खेमा) की राजकुमारियों से विवाह किया।
  - कोशल के राजा प्रसेनजित की बहन से विवाह के बदले में उन्हें दहेज के रूप में काशी का एक हिस्सा प्राप्त हुआ।
  - उसने अंग पर विजय प्राप्त की। जब अवंती राजा प्रद्योत पीलिया से बीमार हो गए, तो उन्होंने अपने राज वेद जीवक को उज्जैन भेजा।
  - उसे श्रोणिक के नाम से जाना जाता था। वह पहला भारतीय राजा था जिसके पास एक नियमित और स्थायी सेना थी।
  - उन्होंने न्यू राजगृह शहर का निर्माण किया।
  - **अजातशत्रु/कुणिका (492 ईसा पूर्व – 460 ईसा पूर्व):** बिम्बिसार के बाद उसका पुत्र अजातशत्रु गद्दी पर बैठा। अपने पिता की हत्या करने के बाद अजातशत्रु सिंहासन पर बैठा।
  - अजातशत्रु ने अधिक मुखर दृष्टिकोण अपनाया। उसने अपने मामा, कोशल के राजा प्रसेनजित पर हमला करके, काशी पर पूर्ण अधिकार कर लिया और पहले के सौहार्दपूर्ण संबंधों को तोड़ दिया।
  - अजातशत्रु के आक्रमण का अगला लक्ष्य वज्जि महासंघ था। परंपरा के अनुसार, यह संघर्ष 16 वर्षों तक चला, और वज्जि लोगों के बीच असंतोष के बीज फैलाकर, वह वज्जी को जीतने में सक्षम होने का एकमात्र तरीका था।
  - वज्जि को पराजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली तीन चीजें– (i) सुनिधा और वत्सकार–अजातशत्रु के कूटनीतिक मंत्री थे, जिन्होंने वज्जियों के बीच कलह के बीज बोए, (ii) रथमुसल–एक प्रकार का रथ जिसमें एक गदा जुड़ी हुई थी (iii) महाशिला कंटक युद्ध में बड़े–बड़े पत्थरों को फेंकने वाले यंत्र का प्रयोग किया था।
  - काशी और वैशाली (वज्जी की राजधानी) को प्राप्त करके, मगध गंगा घाटी में प्रमुख क्षेत्रीय बल बन गया।
  - उसने गंगा के तट पर पाताली गाँव में राजगृह किला और जलदुर्ग (प्रहरीदुर्ग) का निर्माण किया।
  - **उदयिन (460 ईसा पूर्व–440 ईसा पूर्व):** अजातशत्रु का उत्तराधिकारी उसका पुत्र उदयिन था। उनका शासनकाल महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने अपने पिता अज्ञातशत्रु की हत्या कर सत्ता प्राप्त की थी तथा उसने राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया और सोन और गंगा नदियों के मिलन बिंदु पर पाटलिपुत्र शहर का निर्माण किया। उसके बाद उसके उत्तराधिकारी, नागदशक इस वंश का अन्तिम शासक था। मुंडा और नाग–दाश, जिनमें से सभी नेतृत्व करने में असमर्थ थे।
- **शिशुनाग वंश (412 ईसा पूर्व–344 ईसा पूर्व):** नाग–दाशक शासन करने के योग्य नहीं था। इसलिए लोग निराश हो गए और शिशुनाग को अंतिम राजा का मंत्री था राजा के रूप में चुना। शिशुनाग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अवंती के प्रद्योत वंश का विनाश थी। परिणामस्वरूप, मगध और अवंती के बीच 100 वर्षों तक चले संघर्ष को रोक दिया गया। अवंती को बाद में मगध वंश में शामिल कर लिया गया।
- कालाशोक (काकवर्ण) को शिशुनाग का उत्तराधिकारी बनाया गया। उसका शासनकाल महत्वपूर्ण था क्योंकि वैशाली (383 ई.पू.) में उसने द्वितीय बौद्ध संगीति का आह्वान किया था।

- **नंद वंश (344 ईसा पूर्व–323 ईसा पूर्व):** महापद्म ने शिशुनाग वंश को उखाड़ फेंका और राजाओं की एक नई पंक्ति नंदों की स्थापना की। महापद्म को पुराणों और पालि दोनों लेखों में उग्रसेन, या एक महान सेना के मालिक, और सर्वक्षत्रांतक, या सभी क्षत्रियों के उन्मूलनकर्ता के रूप में संदर्भित किया गया है।
- महापद्म को पुराणों में एकराए अकेला राजा कहा गया है। शिशुंग काल के दौरान शासन करने वाले सभी राजवंशों को उसके द्वारा उखाड़ फेंका गया प्रतीत होता है। उन्हें अक्सर ''भारत का पहला साम्राज्य निर्माता'' कहा जाता है।
- महापद्म के उत्तराधिकारी उसके आठ पुत्र बने। अंतिम धनानंद था। ग्रीक लेखन का अग्रम या एक्संद्रामेस और अंतिम राजा धनानंद एक ही व्यक्ति हो सकते हैं। सिकंदर ने धनानंद के शासन के दौरान 326 ईसा पूर्व में उत्तर–पश्चिम भारत पर आक्रमण किया।
- ग्रीक लेखक कर्टियस ने दावा किया कि धनानंद एक बड़ी सेना का प्रभारी था जिसमें 3,000 हाथी, 2,000 रथ, 20,000 घुड़सवार और 200,000 सैनिक शामिल थे। धनानंद की ताकत से सिकंदर का गंगा की घाटी में अभियान रुक गया था, जिसने सिकंदर को भी आतंकित कर दिया था।
- लगभग 322–21 ईसा पूर्व, नंद वंश का अंत हो गया और चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना की।
- **विदेशी आक्रमण:**
  - ईरानी आक्रमण– डेरियस का आक्रमण (518 ईसा पूर्व)
  - मैसेडोनियन आक्रमण–सिकंदर अलेक्जेंडर का आक्रमण (326 ईसा पूर्व)
- 326 ईसा पूर्व में, सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया, सिंधु नदी को पार करने के बाद वह तक्षशिला की ओर बढ़ा। उसने फिर झेलम और चिनाब नदियों के बीच राज्य के भारतीय राजा पोरस को चुनौती दी।
- भीषण युद्ध (हाइडेस्पीज की लड़ाई) में भारतीयों की हार हुई। सिकंदर ने पोरस को बंदी बना लिया और अन्य स्थानीय शासकों की तरह, जिन्हें उसने हराया था, उसे अपने क्षेत्र पर शासन जारी रखने की अनुमति दी।
- सिकंदर 19 महीने (326–325 ईसा पूर्व) तक भारत में रहा, जो लड़ाई से भरा हुआ था जुलाई 325 ईसा पूर्व सिकंदर और उसकी सेना घर के लिए पश्चिम की ओर लौट आई। वह 323 ईसा पूर्व में बाबुल पहुंचा और 33 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

8. मौर्य काल (322 ईसा पूर्व–185 ईसा पूर्व)

- **राजधानी:** पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार)
- **सरकार:** राजतंत्र
- **ऐतिहासिक युग:** सी। 322 ईसा पूर्व (बीसीई) 187 ईसा पूर्व (बीसीई)
- **महत्वपूर्ण राजा:** चंद्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक
- **मौर्य शासक**
  - **चंद्रगुप्त मौर्य:** मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सबसे बड़ा साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में साम्राज्य की स्थापना की।
  - विष्णुगुप्त, जिन्हें बाद में चाणक्य या कौटिल्य के नाम से जाना गया, नंद राजा से अपमानित हुए थे। नदों को समूल नष्ट करने की कसम खाई। चंद्रगुप्त, शायद मैसेडोनिया के सिकंदर से प्रेरित होकर, एक सेना खड़ी कर रहा था और अपना खुद का राज्य स्थापित करने के अवसरों की तलाश कर रहा था।
  - सिकन्दर की मृत्यु का समाचार सुनकर चन्द्रगुप्त ने लोगों को इकट्ठा किया और उनकी सहायता से यूनानी सेना को खदेड़ दिया जिसे सिकन्दर ने तक्षशिला में छोड़ा था। फिर उन्होंने और उनके सहयोगियों ने पाटलिपुत्र की ओर कूच किया और 322 ईसा पूर्व (बीसीई) में नंद राजा को हराया। इस प्रकार मौर्य वंश की स्थापना हुई।
  - चंद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान, सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस, जिनका एशिया माइनर से लेकर भारत तक के देशों पर नियंत्रण था, ने सिंधु को पार किया परन्तु चंद्रगुप्त से हार गया। कहा जाता है कि सेल्यूकस के दूत, मेगस्थनीज, भारत में बना रहा और इंडिका नामक उसका ग्रंथ मौर्य राजनीति और समाज के बारे में एक उपयोगी रिकॉर्ड है।
- गंगा के मैदान पर नियंत्रण पाने के बाद, चंद्रगुप्त ने अपना ध्यान उत्तर–पश्चिम की ओर लगाया ताकि सिकंदर के निधन से उत्पन्न शून्यता का लाभ उठाया जा सके। इन क्षेत्रों में वर्तमान अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और मकरान शामिल थे, जिन्होंने बिना किसी प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात चंद्रगुप्त न मध्य भारत की ओर अभियान शुरू किया।
  - भद्रबाहु, एक जैन भिक्षु, चंद्रगुप्त मौर्य को दक्षिण भारत ले गए। चंद्रगुप्त ने श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में साललेखन (जैन अनुष्ठान जिसमें एक व्यक्ति अपनी मृत्यु तक उपवास करता है) विधि से अपने प्राण त्याग दिए।

क्या आप जानते हैं?

★ कौटिल्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे। उनके द्वारा रचित पुस्तक 'अर्थशास्त्र में राज्य के प्रशासनिक एवं राजनीतिक दायित्वों का वर्णन मिलता है।

  - **बिन्दुसार :** उनका वास्तविक नाम सिहासेना था। वह चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र था। ग्रीक विद्वानों द्वारा उसे अमित्रोचेट्स (दुश्मनों का नाश करने वाला) के रूप में उल्लेखित किया है, जबकि महाभाष्य उन्हें अमित्रघात (शत्रुनाशक) के रूप में संदर्भित करता है।
  - बिंदुसार स्पष्ट रूप से एक सक्षम शासक था जिससे पश्चिम एशिया के ग्रीक राज्यों के साथ घनिष्ठ संपर्क की अपने पिता की परंपरा को जारी रखा। ऐसा माना जाता है कि उसने दो समुद्रों यानी अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के बीच की भूमि पर विजय प्राप्त की थी। उन्हें चाणक्य और अन्य सक्षम मंत्रियों द्वारा सलाह दी जाती रही। ऐसा माना जाता है कि बिंदुसार अजीविका संप्रदाय में दीसित हो गया था।
  - उसने अपने पुत्रों को साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों के वाइसराय के रूप में नियुक्त किया था। बिन्दुसार ने 25 वर्षों तक शासन किया, और उनकी मृत्यु 272 ईसा पूर्व में हुई थी। अशोक बिन्दुसार चुना हुआ उत्तराधिकारी नहीं था, और तथ्य यह है कि वह केवल चार साल बाद 268 ईसा पूर्व में सिंहासन पर आ रहा हुआ था, यह दर्शाता है कि उत्तराधिकार के लिए बिन्दुसार के पुत्रों के बीच संघर्ष हुआ होगा।
  - अपने शासन के दौरान, बिन्दुसार कर्नाटक तक मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने में सफल रहा। उसकी मृत्यु के समय, उपमहाद्वीप का एक बड़ा हिस्सा मौर्य आधिपत्य के अधीन आ गया था। उसने अपने पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल नियुक्त किया। उसकी मृत्यु के बाद, अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा।
  - **अशोक:** अशोक, चौथी शताब्दी ई.पू. में अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य के सबसे महान और शासकों में से एक थे। उन्हें राधागुप्त नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति (प्रधानमंत्री) का समर्थन प्राप्त था।

- चाणक्य के कई विचार अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में लिखे गए हैं। अशोक पहला शासक था जिसने शिलालेखों के माध्यम से अपना संदेश लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया। ये शिलालेख प्राकृत भाषा में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे।
- उन्हें श्देवनाम प्रिय' के रूप में जाना जाता था जिसका अर्थ है 'देवताओं का प्रिय'। कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था। अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध लड़ा था। जब उसने हिंसा और रक्तपात देखा तो वह द्रवित हो गया और इसलिए उसने और युद्ध न करने का निर्णय लिया।

क्या आप जानते हैं?

- ★ अशोक के आक्रमण के दौरान कलिंग (पूर्वी प्रांत) की राजधानी तोशाली थी। इसका उल्लेख उसके 13वें शिलालेख में मिलता है। इसी युद्ध के बाद अशोक ने धम्म विजय की नीति अपनाई।

- वह दुनिया के इतिहास में एकमात्र ऐसा राजा था जिसने युद्ध जीतने के बाद विजय प्राप्त करना छोड़ दिया। युद्ध की विभीषिका का वर्णन राजा ने स्वयं अपने शिलालेख XIII में किया है।
- बिंदुसार चाहता था कि उसका पुत्र सुसीम उसका उत्तराधिकारी बने। राधागुप्त नामक एक मंत्री की सहायता से अशोक अपने 99 भाइयों को मारने के बाद, अशोक (बिंदुसार के पुत्र) ने सिंहासन हासिल किया।
- तक्षशिला के लोगों द्वारा स्थानीय अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह करने पर अशोक तक्षशिला का राज्यपाल (वायसराय) था, और बाद में एक प्रमुख शहर और वाणिज्यिक केंद्र अवंती की राजधानी उज्जैन का राज्यपाल (वाइसराय) नियुक्त किया गया था।
- अशोक सभी समय के महानतम राजाओं में से एक था, और अपने शिलालेखों के माध्यम से अपने लोगों के साथ सीधा संपर्क बनाए रखने वाला पहला शासक माना जाता है। सम्राट के अन्य नामों में बुद्धशाक्य (मास्की शिलालेख में), धर्मसोक (सारनाथ शिलालेख), देवानामपिया (अर्थात् देवताओं के प्रिय) और पियदस्सी (मनभावन उपस्थिति का अर्थ) शामिल हैं, जो श्रीलंकाई बौद्ध कालक्रम दीपवश और महावशं में दिए गए हैं।
- अशोक के शासनकाल के दौरान, मौर्य साम्राज्य ने हिंदुकुश से लेकर बंगाल तक पूरे क्षेत्र में विस्तार किया, और अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और पूरे भारत में कश्मीर और नेपाल की घाटियों सहित, सुदूर दक्षिण में एक छोटे से हिस्से को छोड़कर, जिस पर चोलों और रॉक शिलालेख 13 के अनुसार पांड्य और रॉक शिलालेख 2 के अनुसार केरलपुत्रों और सत्यपुत्रों द्वारा शासित था।
- उसने सीरिया, मिस्र, मैसेडोनिया, साइरेनिका (लीबिया) और एपिरस के अपने समकालीनों शासकों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए, इन सभी का उल्लेख अशोक के शिलालेखों में किया गया है।
- अशोक के शासन की परिभाषित घटना उसके शासनकाल के आठवें वर्ष में कलिंग (वर्तमान ओडिशा) के खिलाफ उसका अभियान था। यह मौर्यो का एकमात्र दर्ज सैन्य अभियान था।
- युद्ध में मारे गए और निर्वासित किये गये, लोगों की संख्या हजारों में थी।
- अभियान शायद सामान्य से अधिक क्रूर था क्योंकि यह कलिंग के खिलाफ एक दंडात्मक कार्यवाही थी, जो सम्भवतः बिन्दुसार के समय में मगध साम्राज्य से अलग हो गया था (हाथीगुम्फा शिलालेख कलिंग को नंद साम्राज्य के एक हिस्से के रूप में बताता है)।
- अशोक नरसंहार से इतना तबाह हो गया था और पीड़ा से हिल गया था कि जिसने उसके दृष्टिकोण और मूल्यों को बदल दिया।
- अशोक अपने आध्यात्मिक गुरु उपगुप्त से बेहद प्रभावित थे उन्हीं के प्रभाव में आकर वह बौद्ध बन गए और उनके नए-नए मूल्यों और विश्वासों की एक परम्परा को अपना लिया, जो शांति और नैतिक धार्मिकता या धम्म (संस्कृत में धर्म) के लिए उनके जुनून की पुष्टि करते हैं।
- **अशोक के शिलालेखः** जेम्स प्रिंसेप, एक ब्रिटिश तत्वशास्त्री और औपनिवेशिक प्रशासक अशोक के शिलालेखों को समझने वाले पहले व्यक्ति थे। अशोक के ये अभिलेख बौद्ध धर्म के प्रथम मूर्त प्रमाण हैं।
- **प्रमुख शिलालेखः**

रॉक एडिक्ट	विवरण
प्रमुख शिलालेख I	पशुओं की बलि पर प्रतिबंध, खासकर त्योहारों के अवसर पर।
प्रमुख शिलालेख II	मनुष्यों और पशुओं का चिकित्सा उपचार, फल, औषधीय जड़ी–बूटियाँ लगाना और कुएँ खोदना। दक्षिण भारत के पांड्यों, सतियपुत्त और केरल पुत्रों का उल्लेख है।
प्रमुख शिलालेख III	ब्राह्मणों के प्रति उदारता। युक्ता, प्रादेशिक और राजुक के बारे में जो धम्म का प्रसार करने के लिए हर पाँच साल में अपने साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में जाते थे।
प्रमुख शिलालेख IV	भेरीघोष (युद्ध की ध्वनि) के ऊपर धम्मघोष (धम्म/धार्मिकता की ध्वनि)। राजा अशोक ने अपने कर्तव्य को सबसे अधिक महत्व दिया।
प्रमुख शिलालेख V	धम्म महामात्र को गुलामों के साथ सही व्यवहार करने को कहा गया। अधिकारियों के एक विशेष संवर्ग, धम्म महामात्र को नियुक्त किया गया और उन्हें राज्य के भीतर धम्म के प्रसार का काम सौंपा गया।
प्रमुख शिलालेख VI	राजा की अपनी प्रजा की स्थिति जानने की इच्छा और कल्याणकारी उपायों की घोषणा।
प्रमुख शिलालेख VII	सभी संप्रदायों के बीच धर्मों के प्रति सहिष्णुता और उसके साथ–साथ पड़ोसी राज्यों में जनता के लिए कल्याणकारी उपाय।
प्रमुख शिलालेख VIII	अशोक की बोधगया की पहली यात्रा और बोधि वृक्ष (उनकी पहली धम्म यात्रा)। धम्म यात्राओं को महत्व।
प्रमुख शिलालेख IX	कर्मकांडों की निंदा करता है। नैतिक आचरण पर जोर देता है।
प्रमुख शिलालेख X	प्रसिद्धि और महिमा के लिए व्यक्ति की इच्छा को अस्वीकार करता है और धम्म पर जोर देता है।
प्रमुख शिलालेख XI	धम्म पालन करने के लिए सबसे अच्छी नीति है, जिसमें बड़ों के प्रति सम्मान और दासों और सेवकों के लिए चिंता शामिल है।

रॉक एडिक्ट	विवरण
प्रमुख शिलालेख XII	इसमें महिला कल्याण के प्रभारी महामात्तों और धम्म महामात्तों और दूसरों के धम्म के प्रति सहिष्णुता का उल्लेख है।
प्रमुख शिलालेख XIII	कलिंग युद्ध और कलिंग पर विजय का उल्लेख किया। अशोक की धम्म विजय का उल्लेख सीरिया के ग्रीक राजाओं एंटिओकस (अमटियोको), मिस्र के टॉलेमी (तुरमय), साइरेन के मैगस (माका), मैसेडोन के एंटीगोनस (अमटीकिनी), एपिरस के सिकंदर (अलीकसुदर) पर हुआ। इस शिलालेख में पांड्यों, चोलों आदि का भी उल्लेख मिलता है। तेरहवां शिलालेख जो कलिंग युद्ध के अंत में जारी किया गया था, एक आक्रामक और हिंसक योद्धा से एक महान प्रेमी और शांति के उपदेशक के रूप में अशोक के परिवर्तन की एक ज्वलंत तस्वीर प्रस्तुत करता है। कलिंग युद्ध का प्रत्यक्ष और तत्काल प्रभाव अशोक का बौद्ध धर्म में परिवर्तन था।
प्रमुख शिलालेख XIV	शिलालेखों का उद्देश्य।

- **लघु शिलालेख** अशोक के जिला लेखों के अवल उसके अशोक के जिला लेखों के अलव उसके देश भर में और अफगानिस्तान में भी 15 चट्टानों पर पाए जाते हैं। अशोक अपने नाम का प्रयोग इनमें से केवल चार स्थानों पर करता है–
  - मस्की,
  - ब्रह्मगिरी (कर्नाटक),
  - गुर्जरा (मध्य प्रदेश) और
  - नेट्टूर (आंध्र प्रदेश)
- **स्तंभ शिलालेख :** सभी स्तंभ मोनोलिथ (पत्थर से उकेरे गए) हैं और सतह अच्छी तरह से पॉलिश की गई है। वे कंधार (अफगानिस्तान), खैबर पख्तूनख्वा (पाकिस्तान), दिल्ली, वैशाली और चंपारण (बिहार), सारनाथ और इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), अमरावती (आंध्र प्रदेश), और सांची (मध्य प्रदेश) जैसे विभिन्न स्थानों से पाए गए हैं।

स्तंभ शिलालेख	विवरण
स्तंभ शिलालेख I	अशोक का अपने लोगों की रक्षा करने का सिद्धांत।
स्तंभ शिलालेख II	धम्म को कम से कम पाप, कई गुण, करुणा, स्वतंत्रता, सच्चाई और पवित्रता के रूप में परिभाषित करता है।
स्तंभ शिलालेख III	अपनी प्रजा के बीच क्रूरता, पाप, कठोरता, अभिमान और क्रोध की प्रथाओं से बचना।
स्तंभ शिलालेख IV	राजुकों की जिम्मेदारियाँ।
स्तंभ शिलालेख V	उन जानवरों और पक्षियों की सूची जिन्हें निश्चित दिनों में नहीं मारना चाहिए। एक अन्य सूची में उन जानवरों का उल्लेख है जिन्हें कभी नहीं मारना चाहिए। 25 कैदियों की रिहाई का वर्णन करता है। इस स्तंभ शिलालेख को दिल्ली–टोपरा स्तंभ शिलालेख के नाम से भी जाना जाता है।
स्तंभ शिलालेख VI	राज्य की धम्म नीति (लोगों का कल्याण)।
स्तंभ शिलालेख VII	धम्म की पूर्ति के लिए अशोक के कार्य। सभी संप्रदायों के लिए सहिष्णुता। इसके अलावा, धम्म महामात्त के बारे में।

- **अन्य प्रासंगिक शिलालेख और महत्वपूर्ण आदेश :**

फतवा/शिलालेख	टिप्पणियां
इलाहाबाद – कोसम / क्वींस एडिक्ट / कौशांबी स्तम्भलेख	• अशोक संघ के सदस्यों से संघों में विभाजन पैदा करने से बचने के लिए कहता है। • इस शिलालेख पर ही समुद्रगुप्त का शिलालेख उत्कीर्ण है। • जहाँगीर ने इसे इलाहाबाद के किले में स्थानांतरित कर दिया।
कंधार शिलालेख	यह ग्रीक और अरामाईक लिपियों में प्रसिद्ध द्विभाषी शिलालेख है।
कलिंग शिलालेख (धोली और जौगड़)	इसमें उल्लेख है कि 'सभी लोग मेरे बच्चे हैं।'
सन्नति शिलालेख (कर्नाटक)	यह सभी 14 प्रमुख शिलालेखों के साथ–साथ दो अलग–अलग कलिंग अभिलेखों का स्थल है।
रुम्मिनदेई शिलालेख (नेपाल)	इसमें उल्लेख है कि लुम्बिनी (बुद्ध का जन्मस्थान) गाँव को कर से छूट दी गई थी जिसे केवल आठवां हिस्सा कर दिया गया था।
रुद्रदमन का गिरनार शिलालेख (काठियावाड़)	चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान सौराष्ट्र के एक राष्ट्रीय (प्रांतीय गवर्नर) पुष्यगुप्त द्वारा निर्मित सुदर्शन झील का उल्लेख है।
लघु शिलालेख 1	यह इंगित करता है कि अशोक ने 2.5 साल सत्ता में रहने के बाद धीरे–धीरे बौद्ध धर्म की ओर रुख कर लिया था।

फतवा/शिलालेख	टिप्पणियां
लघु शिलालेख 3	अशोक संघ का अभिवादन करता है, बुद्ध, धम्म और संघ में अपनी गहरी आस्था व्यक्त करता है, साथ ही भिक्षुओं, भिक्षुणियों और आम लोगों के लिए छह बौद्ध ग्रंथों की सिफारिश करता है।
शाहबाजगढ़ी और मनशेरा शिलालेख।	ये खरोष्ठी लिपि में लिखे गये है।

- **चंद्रशोक (अशोक, दुष्ट) से धर्मसोका (अशोक धर्मी):** कलिंग की लड़ाई के बाद, उपगुप्त के प्रभाव में आकर अशोक बौद्ध बन गया। उसने धम्म की नीति पर लोगों को निर्देश देते हुए देश के विभिन्न भागों में दौरे (धर्मसूत्र) किए।
- **अशोक का धम्म:** 'धम्म' संस्कृत शब्द :धर्म' के लिए प्राकृत शब्द है। अशोक के स्तंभ शिलालेख II में धम्म का अर्थ समझाया गया है। धम्म में किसी देवता की पूजा, या यज्ञ का प्रदर्शन शामिल नहीं था। अशोक अपना कर्तव्य समझता था कि वह अपनी प्रजा को निर्देश दे और वह बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करे।
- अशोक के धम्म में मानवतावाद के महानतम विचार निहित थे, जो सभी धर्मों का सार था। उन्होंने करुणा, दान, पवित्रता, साधुता, संयम, सत्यवादिता, आज्ञाकारिता और माता–पिता, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान पर जोर दिया।
- जो भिक्षु धम्म के बारे में पढ़ाने के लिए जगह–जगह जाते थे। उन्हें धम्म महामात्त कहा जाता था। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महिंद और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था। अशोक ने धम्म के संदेश को फैलाने के लिए धम्ममहाभात्त को पश्चिम एशिया, मिस्र और पूर्वी यूरोप में भी भेजा।
- अशोक ने बौद्ध धर्म में आस्था प्रकट करते हुए अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया था।

क्या आप जानते हैं?

- **अशोक का सिंह शीर्ष:** भारतीय गणराज्य का प्रतीक सारनाथ में स्थित अशोक के स्तंभों में से एक के सिंह शीर्ष से अपनाया गया है। वृत्ताकार आधार से निकला पहिया, अशोक चक्र राष्ट्रीय ध्वज का एक भाग है।
- मौर्य काल में 'एग्रोनोमई' अधिकारी मार्ग निर्माण के क्षेत्र से सम्बन्धित थे।
- मौर्य काल में राजकीय भूमि से होने वाली आय को 'सीता' कहा जाता था। राजकीय भूमि की व्यवस्था करने वाला प्रधान अधिकारी 'सीताध्यक्ष' कहलाता था। भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था। इसका उल्लेख मेगस्थनीज स्ट्रोबो एवं एरियन ने भी किया है। बगैर वर्षा की अच्छी खेती होने वाली भूमि को अदेव भातृक कहा जाता था तथा आय के संग्रहकर्ता को समाहर्ता कहा जाता था।

9. मौर्योत्तर भारत

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर–पश्चिम से शक, सीथियन, पार्थियन, इंडो–यूनानी या बैक्ट्रियन यूनानियों और कुषाणों के आक्रमण हुए। अशोक की मृत्यु के बाद दक्षिण में सातवाहन स्वतंत्र हो गए। गुप्त वंश के उदय से पहले उत्तर में शुंग और कण्व थे। चेदि (कलिंग) ने भी अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी ।
- यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि पश्चातवर्ती समय में मगध भले ही भारत का प्रमुख राज्य नहीं रहा, लेकिन यह बौद्ध संस्कृति का एक बड़ा केंद्र बना रहा।
- **मौर्योत्तर इतिहास के स्रोत:**
  - **पुरातात्विक स्रोत:**
    - **शिलालेख**
      - दाना देव का अयोध्या शिलालेख
      - पर्सेपोलिस, नक्श–ए रुस्तम शिलालेख
      - मोगा (तक्षशिला ताम्रपत्र लेख)
      - जूनागढ़/गिरनार शिलालेख
      - नासिक प्रशस्ति
      - डेरियस I का शिलालेख
    - **सिक्के:**
      - सातवाहनों के सिक्के
      - कडफिसेस II के सिक्के
      - रोमन सिक्के
  - **साहित्यिक स्रोत:**
    - पुराणा
    - गार्गी संहिता
    - बाणभट्ट की हर्षचरित
    - पतंजलि की महाभाष्य
    - गुणाढ्य की बृहत्कथा
    - नागार्जुन की मध्यमिका सूत्र
    - अश्वघोष की बुद्धचरित
    - कालिदास की मालविकाग्निमित्रम्
  - **विदेशी स्रोत:**
    - ह्वेन त्सांग, चीनी बौद्ध भिक्षु और यात्री
- **उत्तर में शुंग:** अंतिम मौर्य सम्राट, बृहद्रथ की हत्या उनके ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी थी, जिसने मगध में अपने शुंग वंश की स्थापना की थी। पुष्यमित्र ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। इसकी दूसरी राजधानी अवन्ति थी।
- शुंग वंश के महत्वपूर्ण शासक थे:
  - पुष्यमित्र शुंग (185–148 ईसा पूर्व)
  - अग्निमित्र (148–141 ईसा पूर्व)
  - भागवत (114 – 82 ईसा पूर्व)
  - देवभूति (82–72 ईसा पूर्व)
- **उत्तर में कण्व:** कण्व वंश ने चार राजा हुए और उनका शासन केवल 45 वर्षों तक चला। कण्वों के पतन के बाद मगध का इतिहास गुप्त वंश के उदय तक किसी भी महत्व से रहित है। कण्व वंश के महत्वपूर्ण शासक थे–
  - वासुदेव
  - भूमि मित्र
  - नारायण
  - सुसरमन

- **दक्षिण में सातवाहन :** उत्तर में कुषाण और दक्षिण में सातवाहन (आंध्र) क्रमशः लगभग 300 वर्ष और 450 वर्ष तक फलते–फूलते रहे। कहा जाता है कि सातवाहन वंश के संस्थापक सिमुक ने तेईस वर्षों तक शासन किया था।

क्या आप जानते हैं?

- ★ सातवाहनों द्वारा चाँदी, ताँबा, सीसा व पोटीन (कांसा) के सिक्कों का प्रयोग किया था। सीसे के सिक्के को रोम से आयात किया जाता था। कुषाणों ने सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण के सिक्के का प्रचलन प्रारम्भ करवाया।
- ★ सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी को गौतमी बलश्री के नासिक अभिलेख में एका ब्राह्मण या अद्वितीय ब्राह्मण कहा गया है।

- **इंडो–ग्रीक, इंडो–पार्थियन, शक और कुषाण**
  - **इंडो–ग्रीक और इंडो–पार्थियन :** उत्तर–पश्चिमी भारत और पंजाब क्षेत्र की विजय के बाद, सिकंदर महान ने प्रांतीय गवर्नरों के अधीन विजित क्षेत्रों को छोड़ दिया। इसके दो पूर्वी क्षत्रपों, बैक्ट्रिया और पार्थिया ने अपने ग्रीक गवर्नरों के अधीन विद्रोह किया और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
  - बैक्ट्रिया का क्षत्रप डायोडोटस और पार्थिया को अर्सेस स्वतंत्र हो गये। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, बैक्ट्रिया और पार्थिया के यूनानी शासकों ने भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा भूमि में अतिक्रमण करना शुरू कर दिया।
  - भारत की पश्चिमी सीमा पर बसने वाले बैक्ट्रियन और पार्थियन धीरे–धीरे अंतर–विवाहित और स्वदेशी आबादी के साथ मिश्रित हो गए। इसने भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग के साथ इंडो–ग्रीक और इंडोपार्थियन उपनिवेशों की स्थापना की।
  - **इंडो–यूनानियों का योगदान :**
    - **सिक्का निर्माण :** इंडो–ग्रीक शासकों ने एक नई मुद्रा प्रणाली की शुरुआत की और उन पर शिलालेख, प्रतीकों और उत्कीर्ण आंकड़ों के साथ उचित आकार के सिक्कों का निर्माण किया। भारतीयों ने यह कला यूनानियों से ही सीखी थी।
    - **मूर्तिकला :** भारतीय कला का गांधार स्कूल ग्रीक प्रभाव का बहुत ऋणी है। यूनानी अच्छे गुफा निर्माता थे। महायान बौद्धों ने उनसे गुफाओं को तराशने की कला सीखी और रॉक–कट वास्तुकला में कुशल हो गए।
  - **शक :** भारत में इंडो–ग्रीक शासन को शकों ने समाप्त कर दिया था। खानाबदोशों के रूप में शक बड़ी संख्या में आए और पूरे उत्तरी और पश्चिमी भारत में बस गए।
  - शक सीथियन, खानाबदोश प्राचीन ईरानी थे, और संस्कृत में शक के रूप में जाने जाते थे। शक शासन की स्थापना गांधार क्षेत्र में माओ या मोगैन ने की थी और उसकी राजधानी 'सिरकाप' थी। मोरा (मथुरा) शिलालेख में उसके नाम का उल्लेख है। उसके सिक्कों पर बुद्ध और शिव के चित्र अंकित हैं।
  - रुद्रदामन शकों का सबसे महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध राजा था। उनका जूनागढ़/गिरनार शिलालेख शुद्ध संस्कृत में पहला शिलालेख था। भारत में, शकों को भारतीय समाज में आत्मसात कर लिया गया था। उन्होंने भारतीय नामों को अपनाना शुरू किया और भारतीय धार्मिक मान्यताओं का पालन किया।
  - शकों ने क्षत्रपों अपने लोगों को अपने क्षेत्रों का प्रशासन करने के लिए प्रांतीय राज्यपालों के रूप में नियुक्त किया।
  - **पार्थियन :** पार्थियन ईरानी मूल के थे और शकों के साथ मजबूत सांस्कृतिक संबंध के कारण, इन समूहों को भारतीय स्रोतों में शक–पहलव के रूप में संदर्भित किया गया था।
  - शकों और पार्थियनों का शासन उत्तर पश्चिमी और उत्तरी भारत के विभिन्न हिस्सों में एक साथ था। उन्होंने क्षत्रपों (राज्यपालों) और महाक्षत्रपों (अधीनस्थ शासकों) के माध्यम से शासन किया।
  - पाकिस्तान के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में पार्थियन शासन का संकेत देने वाला महत्वपूर्ण शिलालेख पेशावर के पास मर्दन से प्राप्त प्रसिद्ध तख्त–ए–बही शिलालेख है।
  - शिलालेख, दिनांकित 45 ईस्वी में, पार्थियन शासक के रूप में गोंडोफर्नेस या गोंडोफेरेस को संदर्भित करता है। कुछ साहित्यिक स्रोत उन्हें सेंट थॉमस के साथ जोड़ते हैं, सेंट के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने राजा और उनके भाई दोनों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया था।
  - **कुषाण :** कुषाणों ने यूह–ची जनजातियों के एक वर्ग का गठन किया, जो सुदूर अतीत में उत्तर–पश्चिमी चीन में बसे हुए थे। पहली शताब्दी ईसा पूर्व में, ची जनजातियाँ पाँच प्रमुख वर्गों से बनी थीं, जिनमें से कुषाणों ने दूसरों पर राजनीतिक प्रभुत्व प्राप्त किया।
  - ईसाई युग की शुरुआत तक, सभी यू–ची जनजातियों ने कुषाणों के वर्चस्व को स्वीकार कर लिया थाय उन्होंने अपनी खानाबदोश आदतों को त्याग दिया और भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा से सटे बैक्ट्रियन और पार्थियन भूमि में बस गए थे।
  - कुषाणों ने बैक्ट्रिया और पार्थिया पर अधिकार कर लिया और धीरे–धीरे खुद को उत्तरी भारत में स्थापित कर लिया। उनकी एकाग्रता ज्यादातर पंजाब, राजपूताना और काठियावाड़ में थी। कुषाण शासक बौद्ध थे। तक्षशिला और मथुरा बौद्ध शिक्षा के महान केंद्र बने रहे, चीन जो पश्चिमी एशिया के छात्रों को आकर्षित करते रहे।
  - कनिष्क सभी कुषाण सम्राटों में सबसे महान था। उन्होंने 78 ईस्वी में संप्रभुता ग्रहण की और एक नए युग की नींव रखते हुए अपने शासन की घोषणा की, जो बाद में शक युग बन गया। कुषाणों की राजधानी प्रारंभ में काबुल थी। बाद में, इसे पेशावर या पुरुषपुर में स्थानांतरित कर दिया गया। कुषाणों की दूसरी राजधानी मथुरा थी।

क्या आप जानते हैं?

- ★ कनिष्क के शासनकाल के तीसरे वर्ष में बौद्ध सन्त बाला द्वारा सारनाथ में बोधिसत्व प्रतिमा लेख स्थापित किया गया, जिसमें कनिष्क के बौद्ध अनुयायी होने की चर्चा की गई है। यह बोधित्सव प्रतिमा लाल पत्थर से बनी है, जो मथुरा मूर्ति निर्माण शैली पर प्रतीक निर्माण है।

10. संगम युग

- 'संगम' शब्द मदुरै में पांड्य राजाओं के शाही संरक्षण के तहत फले–फूले कवियों के संघ को संदर्भित करता है। इन कवियों द्वारा रचित कविताओं को सामूहिक रूप से संगम साहित्य के रूप में जाना जाता है। जिस काल में इन कविताओं की रचना हुई उसे संगम युग कहा जाता है।

- **समय अवधि:** तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) से सी। तीसरी शताब्दी ईस्वी (सीई) तक।
- **तमिझगम:** उत्तर में वेंगदम (तिरुपति पहाड़ी) से दक्षिण में कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) तक, पूर्व और पश्चिम में समुद्र से घिरा हुआ है।
- **आयु:** लौह युग
- **संस्कृति:** मेगालिथिक
- **राजनीति:** राजतंत्र
- **राजवंशों ने शासन किया:** चेर, चोल और पांड्य

- **स्रोत:**
  - **शिलालेख:** कलिंग के राजा खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख, पुगलुर (करूर के पास) शिलालेख, अशोकन शिलालेख II और XIII, और मंगुलम, अलगर्मलाई और कीलावलु (सभी मदुरै के पास) में पाए गए शिलालेख हैं।
  - **तांबे की प्लेटें:** वेल्विकुडी और चिन्नमानुर से प्राप्त तांबे पत्र लेख।
  - **सिक्के:** चेरों, चोलों, पांड्यों और संगम युग के सरदारों के साथ–साथ रोमन सिक्कों द्वारा जारी किए गए सिक्के।
  - **महापाषाण स्मारक:** अंत्येष्टि और वीर पत्थर।
  - **उत्खनित सामग्री:** आदिचनल्लूर, अरिकामेडु, कोडुमनाल, पुहार, कोरकई, अलगनकुलम, उरैयूर से प्राप्त सामग्री।
  - **साहित्यिक स्रोत:** तोलकाप्पियम, एट्टुथोगई (आठ संकलन), पाथुपट्टु (दस मूर्तियाँ), पथिनेन कीज कनक्कू (अठारह काव्य कृतियों का संग्रह), पट्टिनप्पलाई और मदुरैकंजी। महाकाव्य शिलापदिकरम और मणिमेखलई।
  - **विदेशी नोटिस:** द पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी, प्लिनी का प्राकृतिक इतिहास, टॉलेमी का भूगोल, मेगस्थनीज की इंडिका, राजावली, महावंश और दीपवंश।
- संगम युग दक्षिण भारत में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक की अवधि है। तमिल किंवदंतियों का कहना है कि प्राचीन दक्षिण भारत में मुच्छंगम नामक 3 संगम आयोजित किए गए थे। ये संगम मदुरै के पांड्य राजाओं के राजकीय संरक्षण में फले–फूले थे।
- संगम युग के दौरान तीन राजवंशों ने शासन किया – चेर, चोल और पांड्य। इन साम्राज्यों के बारे में साक्ष्य का मुख्य स्रोत संगम काल के साहित्यिक संदर्भों से रेखांकित किया गया है।

संगम काल	वर्तमान नगर	प्राचीन राजधानी	महत्वपूर्ण शासक	महत्वपूर्ण पत्तन	राजचिन्ह
चेर	केरल	वन्जी	चेर शेनगुट्टवन	मुसिरी, तोंडी	तीर, कमान
चोल	तमिलनाडु	उरैयुर, पुहार	करैकल	कावेरीपट्टनम	बाघ
पांड्य	तमिलनाडु	मदुरै	नेंदुनचेलियन	मुजिरिस (मुचिरी), कोरकई, कावेरी	मछली

- **चेर:** चेरों ने आधुनिक केरल के बड़े हिस्से पर शासन किया। बंजी चेरों की राजधानी थी। मुसिरी और टोंडी इस काल के महत्वपूर्ण बंदरगाह थे। चेरों का प्रतीक 'धनुष' था।
- पहली सदी के पुगलूर अभिलेख में चेरा राजाओं की तीन पीढ़ियों का उल्लेख है। सेनगुट्टुवन (दूसरी शताब्दी सीई) चेरा वंश के प्रमुख शासक थे। सेनगुट्टुवन की सैन्य उपलब्धियों को महाकाव्य सिलपदिकारम में दर्ज किया गया है, जो उनके हिमालय अभियान के बारे में बात करता है जहां उन्होंने उत्तरी भारत के कई शासकों को पराजित किया था।
- सेनगुट्टुवन ने तमिलनाडु में पटिनी पंथ या आदर्श पत्नी के रूप में कन्नगी की पूजा की शुरुआत की। वह दक्षिण भारत से चीन में राजदूत भेजने वाले पहले व्यक्ति थे।
- **चोल:** संगम काल का चोल साम्राज्य आधुनिक समय के तिरुचिरापल्ली जिले, तिरुवरूर जिले, नागापट्टिनम जिले, अरियालुर जिले, पेरम्बलुर जिले, पुदुक्कोट्टई जिले, तमिलनाडु के तंजावुर जिले और कराईकल जिले में फैला हुआ है।
- प्रारम्भ में चोलों की राजधानी उरैयुर थी। बाद में इसे पुहार (जिसे पूम्पुहर भी कहा जाता है) में स्थानांतरित कर दिया गया। राजा करिकाल संगम चोल वंश के एक प्रमुख राजा थे। चोलों का प्रतीक चिन्ह/चिन्ह 'बाघ' था। कदियालुर उरुत्तिरंगन्नार द्वारा लिखित पट्टिनप्पलाई में उसके जीवन के साथ–साथ सैन्य उपलब्धियों को भी दर्शाया गया है।
- विभिन्न संगम कविताओं में वेन्नी की लड़ाई का उल्लेख है जहां उन्होंने चेरों, पांड्यों और 11 छोटे सरदारों के गठबंधन को हराया था। वैहैपरंदलाई करिकाल द्वारा लड़ी गई एक और महत्वपूर्ण लड़ाई थी। उसके शासन काल में व्यापार और वाणिज्य खूब फला–फूला। उन्होंने खेती के लिए जंगल से प्राप्त भूमि के लिए पानी उपलब्ध कराने के लिए कावेरी नदी के पास सिंचाई टैंक का निर्माण करवाया था।
- **पांड्य:** पांड्यों ने आधुनिक तमिलनाडु के दक्षिणी क्षेत्र पर शासन किया। मदुरै पांड्यों की राजधानी थी। उनका प्रतीक 'मछली' था। राजा नेदुनचेलियन को आर्यप्पादई कदंथा नेदुनचेलियन भी कहा जाता था। पौराणिक कथाओं के अनुसार, कोवलन की पत्नी कण्णगी के श्राप ने मदुरै को जलाकर नष्ट कर दिया था। कोरकई के बंदरगाह की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का उल्लेख मदुरैक्कांजी में किया गया था जिसे मंगुडी मारुथनार ने लिखा था।

11. गुप्त वंश

- गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी और उसका उत्तराधिकारी उनके पुत्र घटोत्कच था। यह राजवंश चंद्रगुप्त–प्रथम, और समुद्रगुप्त आदि जैसे शासकों के साथ प्रसिद्ध हुआ। कुछ महत्वपूर्ण गुप्त साम्राज्य के राजाओं का विवरण नीचे दिया गया है–
  - **श्री गुप्त:** गुप्त वंश के संस्थापक श्री गुप्त था। वह अपने घटोत्कच पुत्र के कारण स्वतंत्र होने में सफल हुआ था। इन दोनों को महाराज कहा जाता था।
  - **चंद्रगुप्त प्रथम (320 – 330 ईस्वी):** चंद्रगुप्त प्रथम, वह महाराजाधिराज (राजाओं के महान राजा) कहलाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली। उन्होंने उस परिवार की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
  - महरौली लौह स्तंभ अभिलेख में उसके व्यापक विजय अभियानों का उल्लेख है। चंद्रगुप्त प्रथम को गुप्त युग का संस्थापक माना जाता है जो 320 ईस्वी में उसके राज्यारोहण के साथ शुरू होता है।
  - **समुद्रगुप्त (330–380 ई.):** समुद्रगुप्त संभवतरू गुप्त वंश के शासकों में सबसे महान था। इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख समुद्रगुप्त के शासनकाल का विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारतीय राजाओं के खिलाफ अभियान किया था।

- समुद्रगुप्त में अश्वमेध यज्ञ किया। समुद्रगुप्त ने सोने और चांदी के सिक्के जारी किए जिन पर 'अश्वमेध को पुनर्स्थापित करने वाले' की कथा अंकित थी। उनकी सैन्य उपलब्धियों के कारण समुद्रगुप्त को श्भारतीय नेपोलियन' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था।
- **चन्द्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.):** समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य उत्तराधिकारी बना। वैवाहिक गठबंधनों के माध्यम से, चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजनीतिक शक्ति को मजबूत किया। चंद्रगुप्त द्वितीय ने कुबेरनागा से विवाह किया, वह मध्य भारत की एक नागा वंश की राजकुमारी थीं।
- चंद्रगुप्त द्वितीय की सबसे बड़ी सैन्य उपलब्धि पश्चिमी भारत के शक क्षत्रपों के खिलाफ उसका युद्ध था। अपनी जीत के बाद, उसने घोड़े की बलि दी और सकारी की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ है, 'शकों का नाश करने वाला'। वह अपने को 'विक्रमादित्य' भी कहता था।

क्या आप जानते हैं?

- उसके अन्य नाम देवगुप्त, देवराज तथा देवश्री और उपाधियाँ विक्रमांक और परमभागवत आदि थीं। मेहरौली लेख के अनुसार उसने विष्णुपद पर्वत पर विष्णु ध्वज की स्थापना कराई थी। उसे शक विजेता के रूप में भी जाना जाता है।

- उज्जैन एक महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर था और गुप्तों की वैकल्पिक राजधानी था। गुप्त साम्राज्य की महान समृद्धि विभिन्न प्रकार के सोने के सिक्कों से प्रकट होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान भारत आया था। फाहियान ने गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी है।
- **कुमारगुप्त:** कुमारगुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र और उत्तराधिकारी था। उसने कई सिक्के जारी किए और उसके शिलालेख पूरे गुप्त साम्राज्य में पाए गए हैं। कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। कुमारगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की नींव रखी जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के संस्थान के रूप में उभरा। 'पुष्यमित्र' नामक शक्तिशाली धनी जनजाति ने गुप्त सेना को उसके शासनकाल के अंत में हराया था।
- **स्कंदगुप्त:** मध्य एशिया के हूणों की एक शाखा ने हिंदू कुश पर्वतों को पार करने और भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया। स्कंदगुप्त जिसने वास्तव में हूणों के आक्रमण का सामना किया था। उसने हूणों के खिलाफ विजय प्राप्त की और साम्राज्य को बचाया तथा उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दिया।

क्या आप जानते हैं?

- पुण्ड्रवर्धन का उल्लेख गुप्तकालीन अभिलेखों में हुआ है। गुप्त साम्राज्य में पुण्ड्रवर्धन नाम की एक भुक्ति थी जो पुण्ड्र देश के अन्तर्गत आती थी।
- इन ताम्रपट्ट लेखों से ज्ञात होता है कि लगभग समग्र उत्तरी बंगाल या पुण्ड्र देश पुण्ड्रवर्धन भुक्ति में सम्मिलित था और यह 443 ई. से 543 ई. तक गुप्त साम्राज्य का अंग था। यहाँ के शासक उपरिक महाराज की उपाधि धारण करते थे और इन्हें गुप्त नरेश नियुक्त करते थे।

12. गुप्तोत्तर काल

- गुप्तों और वाकाटक शासकों के पतन के साथ राजनीतिक स्थिति जटिल हो गई। गुप्तों के सामंत उत्तर में स्वतंत्र हो गए। दक्कन और सुदूर दक्षिण में भी स्वतंत्र हुई शक्तियों की बहुलता देखी गई।
- गुप्तों के पतन से लेकर हर्ष के उदय तक भारत में राजनीतिक परिदृश्य विस्मयकारी था। कुछ समय तक बड़े पैमाने पर लोगों का विस्थापन होता रहा। गुप्तों की विरासत के लिए छोटे–छोटे राज्यों में आपस में होड़ मच गई। उत्तरी भारत को मगध के बाद के गुप्तों, मौखरियों, पुश्य भूतियों और मैत्रकों के चार राज्यों में विभाजित किया गया था। मौखरियों ने सर्वप्रथम कन्नौज के आसपास पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर अधिकार किया। धीरे–धीरे उन्होंने बाद के गुप्तों को पराजित कर उन्हें मालवा में स्थानांतरित कर दिया।

शासक राजवंश

उत्तर भारत	दक्षिण भारत
मैत्रक	ईक्ष्वाकुओं
मौखरी	बादामी के चालुक्य
गौड़	कांची के पल्लव
हूणों	कदम्ब साम्राज्य
थानेसर के पुष्यभूति	कालभ्रस

- **पुष्यभूति वंश:** पुष्यभूति या वर्धन वंश की स्थापना थानेसर (कुरुक्षेत्र जिला) में पुष्यभूति द्वारा संभवतः 6वीं शताब्दी की शुरुआत में की गई थी। पुष्यभूति गुप्तों के सामंत थे, लेकिन हूणों के आक्रमणों के बाद वे स्वतंत्र हो गए।
- राजवंश का पहला महत्वपूर्ण शासक प्रभाकर वर्धन (580–605 ई.) था। प्रभाकर वर्धन ने अपने सबसे बड़े पुत्र राज्यवर्धन (605–606 ईस्वी) को उत्तराधिकारी बनाया गया था, राज्यवर्धन को 606 ईस्वी में शशांक द्वारा मार डाला गया था।
- हर्षवर्धन का जन्म 590 ई. में स्थानेश्वर (थानेसर, हरियाणा) के राजा प्रभाकर वर्धन के यहाँ हुआ था। वह पुष्यभूति से संबंधित था जिसे वर्धन वंश भी कहा जाता था। वह एक हिंदू थे जिन्होंने बाद में महायान बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उनका विवाह दुर्गावती से हुआ था।
- उनकी एक बेटी और दो बेटे थे। उनकी बेटी ने वल्लभी के मैतक वंश के एक राजा से विवाह किया था, जबकि उनके बेटों को उनके ही मंत्री ने मार डाला। चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने अपने लेखन में राजा हर्षवर्धन के कार्यों की प्रशंसा की।
- प्रभाकर वर्धन की मृत्यु के बाद, उनका बड़ा पुत्र राज्यवर्धन थानेसर के सिंहासन पर बैठा। हर्ष की एक बहन थी, राज्यश्री जिसका विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ था। गौड़ शासक शशांक ने ग्रहवर्मन को मार डाला और राज्यश्री को बंदी बना लिया।
- इस घटना ने राज्यवर्धन को शशांक के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। लेकिन शशांक ने राज्यवर्धन को मार डाला। इसके बाद युद्ध के मैदान में ही 16 वर्षीय हर्षवर्धन को 606 ईस्वी में थानेसर की पर बैठने का अवसर मिला। उसने अपने भाई की हत्या का बदला लेने और अपनी बहन को बचाने की कसम खाई।

- इसके लिए उसने कामरूप के राजा भास्करवर्मन के साथ संधि की। हर्ष और भास्करवर्मन ने शशांक के खिलाफ अभियान किया। अंततः शशांक बंगाल भाग गया और हर्ष कन्नौज का भी राजा बना।
- **हर्ष का साम्राज्यः** कन्नौज को प्राप्त करने पर, हर्ष ने थानेसर और कन्नौज दो राज्यों को एकजुट किया। वह अपनी राजधानी कन्नौज ले गया। गुप्तों के पतन के बाद उत्तर भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया था। परन्तु हर्ष अपने नेतृत्व में उनमें से कई को एकजुट करने में सफल रहा।
- पंजाब और मध्य भारत पर उसका अधिकार था। शशांक की मृत्यु के बाद उसने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर अधिकार कर लिया। उन्होंने गुजरात के वल्लभी राजा को भी हराया। यद्यपि (हर्ष की बेटी और वल्लभी राजा ध्रुवभट्ट के बीच विवाह से वल्लभी राजा और हर्ष में समझौता हो गया और दोनों राज्यों में मित्रता हो गई।)
- हालाँकि, दक्षिण को जीतने की हर्ष की योजना अधूरी रह गई जब चालुक्य राजा, पुलकेशिन द्वितीय ने 618–619 ईस्वी में हर्ष को हराया, इसने नर्मदा नदी के रूप में हर्ष की दक्षिणी क्षेत्रीय सीमा को सीमित कर दिया।
- यहां तक कि सामंत भी हर्ष के कड़े नियंत्रण में थे। हर्ष के शासनकाल ने भारत में सामंतवाद की शुरुआत को चिह्नित किया। ह्वेन त्सांग ने हर्ष के शासनकाल में भारत का दौरा किया था। उसने राजा हर्ष और उसके साम्राज्य का बहुत अनुकूल विवरण दिया है। वह उसकी उदारता और न्याय की प्रशंसा करता है।
- हर्ष कला का महान संरक्षक था। वे स्वयं एक सिद्धहस्त लेखक था। उन्हें संस्कृत कृतियों रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद को लेखन का श्रेय दिया जाता है। बाणभट्ट उसके दरबारी कवि थे उन्होंने हर्षचरित की रचना की जिसमें हर्ष के जीवन और कार्यों का लेखा–जोखा दिया गया है।
- हर्ष ने नालंदा विश्वविद्यालय को उदारतापूर्वक दान दिया। हर्ष ने एकत्र किए गए सभी करों का एक चौथाई दान और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता था।
- हर्ष एक सक्षम सैन्य विजेता और एक सक्षम प्रशासक था। हर्ष मुसलमानों के आक्रमण से पहले भारत में एक विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाला अंतिम राजा था।
- **हर्ष की मृत्युः** हर्ष की मृत्यु 41 वर्ष तक शासन करने के बाद 647 ई. में हुई। चूंकि वह बिना किसी उत्तराधिकारी के मर गया, इसलिए उसकी मृत्यु के तुरंत बाद उसका साम्राज्य बिखर गया।

क्या आप जानते हैं

- ★ एक पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान ब्रह्म ने दशाश्वमेध घाट पर किये गये दशाश्वमेध यज्ञ के समय दस घोड़ों की बलि दी थी।
- ★ प्राचीन गणित की पुस्तक गणित सार संग्रह के लेखक महावीराचार्य थे, इन्होंने यह पुस्तक 9 वीं शताब्दी में लिखी।
- ★ गंग वंश के राजा नरसिंह देव प्रथम ने अपने वंश का वर्चस्व सिद्ध करने हेतु राजसी घोषणा से कोणार्क मंदिर निर्माण का आदेश दिया। बारह सौ वास्तुकारों और कारीगरों के एक समूह ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा और ऊर्जा से परिपूर्ण कला से बारह वर्षों की अथक मेहनत से इसका निर्माण किया।
- ★ अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, न्यायमीमांसा, सभी ग्रंथों में अपराध और अपराधी का जिक्र आता है।
- ★ उपनयन या यज्ञोपवीत 16 संस्कारों में से 10 वाँ संस्कार है जिसमें आध्यात्मिक व भौतिक उत्पत्ति हेतु जनेऊ या उपनयन धारण कराया जाता है।
- ★ प्रयाग, वह स्थल है, जहाँ हर्षवर्धन ने बौद्ध महासम्मेलन का आयोजन किया था।
- ★ पतंजलि पुष्यमित्र शुंग के समकालीन थे। उन्होंने व्याकरण की प्रसिद्ध रचना महाभाष्य की रचना की थी।
- ★ धन्वन्तरि, चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की सभा को सुशोभित करने वाले प्रसिद्ध चिकित्सक थे।
- ★ वी. एस. वाकंकर वह व्यक्ति और भारतीय पुरातत्त्ववेत्ता हैं, जिन्होंने पहली बार 'भीमबेटका गुफा' को देखा और उसके शैलचित्रों के प्रागैतिहासिक महत्व को खोजा।
- ★ चीनी लेखक भारत का उल्लेख 'यिन-तु' नाम से करते हैं। प्राचीन काल में भारत को फारसी में हिन्दू, यूनानी में 'इण्डोस' आदि नामों से जाना जाता था।
- ★ विष्णु के वाराह अवतार को समुद्र से पृथ्वी का उद्धार करते हुए प्रदर्शित किया गया है। गुप्तकाल की कई मूर्तियाँ विष्णु के इस रूप में दिखाई गई हैं।
- ★ कन्हेरी की गुफा संख्या 41 में 11 सिरों वाले बोधिसत्व (अवलोकितेश्वर) का अंकन पाया जाता है।
- ★ बुद्ध द्वारा अपने धर्म में दीक्षित किए जाने वाला अन्तिम व्यक्ति सुभद्द था। आनन्द और सुभद्द बुद्ध के प्रिय शिष्यों में से थे। सुभद्द ने बुद्धत्व को प्राप्त किया था। सुभद्द ने बुद्ध की मृत्यु के समय उनसे तीन प्रश्न पूछे थे जिनका बुद्ध ने नकारात्मक उत्तर दिया था।
- ★ यहूदी एक गैर भारतीय धर्म है। यहूदी धर्म यहूदियों का एकेश्वरवादी धर्म है, जो यह मानता है कि ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव मानव गतिविधियों और इतिहास द्वारा होता है।
- ★ गुप्त काल की चित्रकला का जन्म विशेषतः मथुरा शैली द्वारा स्थापित प्रतिमानों पर हुआ था । गुप्त मूर्तिकला के सर्वोत्तम उदाहरण सारनाथ की मूर्तियाँ और चित्रकला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अजन्ता बौद्ध कला आदि हैं। भूमि स्पर्श मुद्रा की कुछ प्रतिमा गुप्त काल में मिलती हैं।
- ★ सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश मन्वन्तर और वंशानुचरित पुराणों के संकेतक हैं।
- ★ लकुलीश शैव या पाशुपत सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं।इस सम्प्रदाय का विशेष वृत्तान्त शिलालेखों, विष्णुपुराण, लिंगपुराण आदि में मिलता है।
- ★ नागार्जुन शून्यवाद के प्रतिष्ठापक तथा माध्यमिक मत के पुरस्कारक प्रख्यात बौद्ध आचार्य थे।
- ★ मौर्यकाल के सप्तांग सिद्धान्त में राजा, आमात्य, जनपद दुर्ग कोश, सेना और मित्र शामिल थे।
- ★ महापद्मनन्द अपरोपरशुराम के नाम से जाना जाता है। पुराण में वर्णित नंद वंश का संस्थापक महापद्मनन्द एक शूद्र शासक था।
- ★ हरिषेण रचित 'प्रयाग प्रशस्ति में गुप्त' सम्राट समुद्रगुप्त के लिए 'पृथिष्या प्रथम वीर' की उपाधि प्रयुक्त हुई है। यह प्रशस्ति वर्तमान समय में (इलाहाबाद) में स्थित है।

- ★ भीतरी स्तम्भ अभिलेख में पुष्यमित्र एवं हूणों के साथ स्कन्दगुप्त के युद्ध का वर्णन प्राप्त है। यह अभिलेख उत्तर प्रदेश के गाजापुर जिले में सैदपुर तहसील में भीतरी नामक स्थान पर मिला है।
- ★ भारत में स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन नियमित उपयोग के लिए सर्वप्रथम कैडफिसेज ने करवाया।
- ★ प्राचीन भारत के अन्तिम हिन्दू शासक हर्ष को विद्वानों के संपोषक के रूप में ही नहीं बल्कि प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानन्द नामक तीन नाटकों के रचयिता के रूप में भी जाना जाता है। उसे साहित्यकार सम्राट कहा गया है।
- ★ बराबर पहाड़ी की गुफाओं का निर्माण अशोक के शासनकाल में हुआ। इन पर सामान्यतः अशोक के शासनकाल का लेख खुदा हुआ है।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता में 'गढ़' जगह किस के लिए जानी जाती थी?
(A) वहाँ उच्चतर वर्ग के तीन लोग बसते थे।
(B) वहाँ पुस्तक रखी जाती थी।
(C) वहाँ पूरे शहर के लिए भोजन तैयार किया जाता था।
(D) वहाँ निचले वर्ग के लोग बसते थे।

2. हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार, महाकाव्य रामायण में भगवान श्री राम अयोध्या के शासक थे, जो ………… की राजधानी थी।
(A) हस्तिनापुर (B) कुरु
(C) कलिंग (D) कौशल

3. तीसरी बौद्ध परिषद् किस शहर में आयोजित की गयी थी ?
(A) यांगून (B) पाटलिपुत्र
(C) वैशाली (D) राजगीर

4. श्वेताम्बर और दिगम्बर किस धर्म के हैं ?
(A) बौद्धमत (B) जैनमत
(C) हिन्दुत्व (D) सिखमत

5. कौटिल्य का अर्थशास्त्र मौर्य प्रणाली के किस क्षेत्र का वर्णन करता है?
(A) अर्थशास्त्र (B) प्रशासन
(C) विदेश नीति (D) वाणिज्य

6. सती प्रथा का प्रथम अभिलेखिक साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
(A) एरण से (B) जूनागढ़ से
(C) मंदसौर से (D) साँची से

7. निम्न में से कौन-सा स्थल प्रागैतिहासिक चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है ?
(A) वाघ (B) अजन्ता
(C) अमरावती (D) भीमबेटका

8. हड़प्पा सभ्यता का स्थल माण्डी, भारत के किस राज्य में स्थित है ?
(A) गुजरात (B) हरियाणा
(C) राजस्थान (D) उत्तर प्रदेश

9. दधेरी एक परवर्ती हड़प्पीय पुरास्थल है।
(A) जम्मू का (B) पंजाब का
(C) हरियाणा का (D) उत्तर प्रदेश का

10. निम्नलिखित में से कौन शुक्ल यजुर्वेद की संहिता है ?
(A) वाजसनेय (B) मैत्रायणी
(C) तैतरीय (D) काठक

11. गायत्री मन्त्र के नाम से प्रसिद्ध मन्त्र सर्वप्रथम किस ग्रन्थ में मिलता है ?
(A) भगवद् गीता (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) मनुस्मृति

12. ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में मंत्र सम्बन्धित हैं–
(A) अग्नि से (B) वरूण से
(C) विष्णु से (D) यम से

13. निम्नलिखित वैदिक देवताओं में किसे उनका पुरोहित माना जाता था ?
(A) अग्नि (B) वृहस्पति
(C) द्योस (D) इन्द्र

14. निम्नलिखित में से किस शैलकृत गुफा में ग्यारह सिरों के बोधिसत्व का अंकन मिलता है ?
(A) अजन्ता (B) एलोरा
(C) कन्हेरी (D) कार्ले

15. निम्नलिखित में से कौन-सा बौद्ध पवित्र स्थल निरंजना नदी पर स्थित था ?
(A) बोधगया (B) कुशीनगर
(C) लुम्बिनी (D) ऋषिपत्तन

16. निम्नलिखित में से कौन–सा धर्म 'विश्व विनाशकारी प्रलय' की अवधारणा में विश्वास नहीं करता?
(A) बौद्ध धर्म (B) जैन धर्म
(C) हिन्दू धर्म (D) इस्लाम

17. बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु कहाँ बिताई थी ?
(A) श्रावस्ती में (B) वैशाली में
(C) कुशीनगर में (D) सारनाथ में

18. निम्नलिखित में से किस राजा के एक अभिलेख से सूचना मिलती है कि शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म लुम्बनी में हुआ था?
(A) अशोक (B) कनिष्क
(C) हर्ष (D) धर्मपाल

19. छठी शताब्दी ई.पू. का मत्स्य महाजनपद स्थित था–
(A) पश्चिमी उत्तर प्रदेश में
(B) राजस्थान में
(C) बुन्देलखण्ड में
(D) रुहेलखण्ड में

20. निम्नलिखित में से कौन सिकन्दर के साथ भारत में नहीं आया था ?
(A) नियार्कस (B) आनेसिक्रिटस
(C) डाइमेकस (D) अरिस्टोब्यूलस

21. मौर्यकाल में 'सीता' से तात्पर्य है–
(A) एक देवी
(B) एक धार्मिक सम्प्रदाय
(C) राजकीय भूमि से प्राप्त आय
(D) ऊसर भूमि

22. बिना बेगार के किसने सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया ?
(A) चन्द्रगुप्त मौर्य (B) बिन्दुसार
(C) अशोक (D) रुद्रदामन प्रथम

23. कालिंग नरेश खारवेल किस वंश से सम्बन्धित था ?
(A) चेदि (B) कदम्ब
(C) हर्यक (D) कलिंग

24. निम्नलिखित में से किसने चार अश्वमेघ यज्ञ किये थे ?
(A) पुष्यमित्र शुंग (B) प्रवरसेन I
(C) समुद्रगुप्त (D) कुमारगुप्त I

25. वह चोल राजा कौन था जिसने श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता दी और सिंहल राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था ?
(A) कुलोत्तुंग 1 (B) राजेन्द्र 1
(C) अधिराजेन्द्र (D) राजाधिराज 1

उत्तरमाला

1. (A)	**2.** (D)	**3.** (B)	**4.** (B)	**5.** (B)
6. (C)	**7.** (B)	**8.** (A)	**9.** (A)	**10.** (C)
11. (C)	**12.** (D)	**13.** (C)	**14.** (D)	**15.** (C)
16. (D)	**17.** (D)	**18.** (A)	**19.** (D)	**20.** (D)
21. (A)	**22.** (C)	**23.** (D)	**24.** (A)	**25.** (A)

❑❑